ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

आश्विन २०८० अक्टूबर २०२३

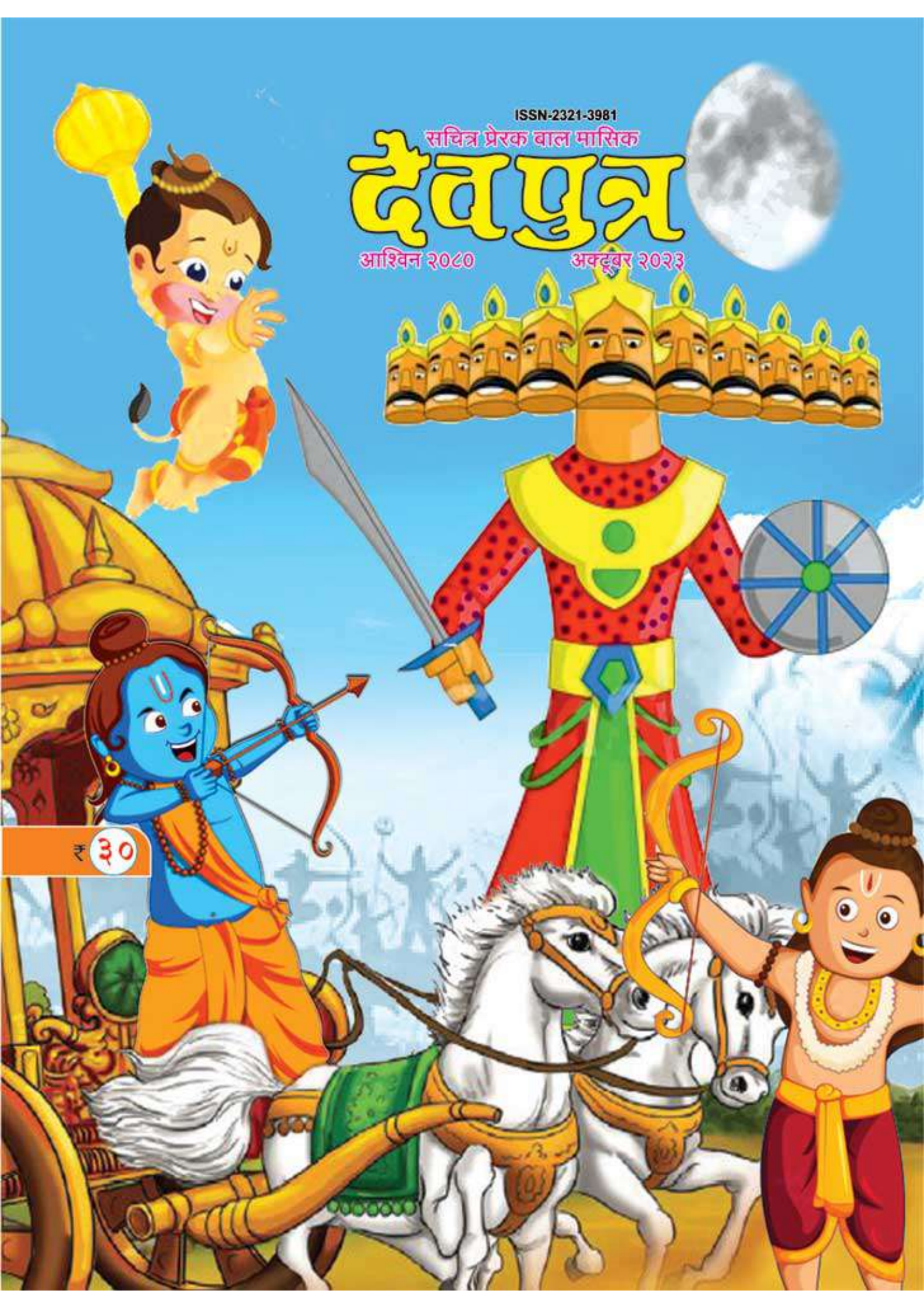

₹ ३०

कविता

बच्चा-बच्चा राम बनेगा

– प्रकाश मनु

बोल उठी है नभ की लाली, बोली धरती की हरियाली,
बच्चा-बच्चा राम बनेगा, मेरे भारत का!

एक-एक कर जुड़ते जाएँ
नन्हें-नन्हें हाथ,
मिलता जाए अंबर-धरती
सबका इनको साथ।
आगे चलकर रच देंगे ये
एक नया इतिहास,
नभ के झलमल सूरज जैसा
गौरव का इतिहास!

उजला माथा फिर चमकेगा, मेरे भारत का,
बच्चा-बच्चा राम बनेगा, मेरे भारत का!

दुष्ट इरादों वाली लंका
पल भर में ढह जाए,
नफरत की बंदूकों वाला
हाथ जोड़कर जाए।
नन्हें-नन्हें तीर गिरा देंगे
झूठी दीवारें,
दुर्ग गिरेंगे सब दुश्मन के
टूटेंगी तलवारें!

हर जर्रा जयगान करेगा, मेरे भारत का,
बच्चा-बच्चा राम बनेगा, मेरे भारत का!

करवट बदलेगी फिर धरती
होगा नया सवेरा,
हरे-भरे जंगल में हँस-हँस
पंछी करें बसेरा।
निर्मल होंगीं नदियाँ फिर से
महकी खूब हवाएँ,
सोने जैसी फसलें फिर-फिर
खेतों में लहराएँ।

अंबर भी जयगान करेगा, मेरे भारत का,
बच्चा-बच्चा राम बनेगा, मेरे भारत का!

– फरीदाबाद (हरियाणा)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आश्विन २०८० ▪ वर्ष ४४
अक्टूबर २०२३ ▪ अंक ०४

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

मेरा चन्दा मेरा सूरज, धरती मेरी प्यारी।
अन्तरिक्ष में सीमोल्लंघन, विजया दशमी न्यारी।।

जी हाँ, इस बार तो विजयादशमी के पहले ही हमारे वैज्ञानिकों ने सीमोल्लंघन करके दिखा दिया। चन्द्रयान-३ का अभियान पूर्णत: सफल रहा और चन्द्रमा का वह दक्षिणी ध्रुव जो आज तक संसार में सबसे अछूता था सर्वप्रथम भारत ने उस पर अपनी छाप अंकित कर दी।

दूसरी बड़ी उपलब्धि भी इस प्रकार साथ-साथ मिली जैसे भारतीय लोककथाओं में चन्दासूरज एक साथ रहते हैं। चन्द्रयान-३ की सफलता के साथ ही आदित्य- L1 का अन्तरिक्ष अभियान सूर्य के जब अनुसंधान हेतु तैयार ही था।

विजयादशमी यानि दशहरा सीमा से बढ़कर प्रयत्न करने का पर्व है। लाखों वर्ष पूर्व भगवान श्रीराम ने सागर पार कर दक्षिण दिशा में रावण की लंका को जीता था। श्रीराम तो उस समय भौतिक साधनों में कम ही थे, वनवासी थे, न प्रशिक्षित सेना, न सेना के पास प्रगत शस्त्रास्त्र थे। था तो सत्य का सहारा, धर्म का आश्रय, अदम्य साहस और सतत् कर्मशीलता।

युगों बाद भी हम पुन: विश्व की महाशक्तियों को पीछे छोड़ सफलता के नए आयामों में सबसे आगे हो गए 'सीमित साधन, पर असीमित लगन' से हमारे वैज्ञानिकों ने भारत की सर्वश्रेष्ठता पुन: सिद्ध कर दी।

कुछ दिनों पूर्व पुनरूत्थान विद्यापीठ के विदुषी कुलपति आदणीया इन्दुमति जी ने अपने व्याख्यान में एक सूत्र कहा, **'करने से होता है। करने से ही होता। करने से होता ही है।'**

राम के युग से आज के युग तक इस सूत्र की सार्थकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्ध हुई है।

आप भी इस सूत्र को अपनाइए और जुट जाइए जीवन के हर संघर्ष में सफलता के लिए। बढ़ जाइए, जीवन की हर दिशा में एक ऐसे सकारात्मक सीमा-उल्लंघन के लिए कि सारा संसार देखे कि भारत बच्चा-बच्चा कैसे मनाता है विजयादशमी।

मेरी अनंत मंगल कामनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- रानी दुर्गावती -डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा' ०५
- माँ की सीख -पवन कुमार वर्मा १६
- चन्द्रमा पर चन्द्रयान -सनत कुमार १८
- ब्रेन मोड -हरदेव चौहान ३४
- सूरज से मित्रता -गिरीश पंकज ४०

छोटी कहानी

- मुस्कान की बोहनी -श्यामल बिहारी महतो २१
- शुभ्रा -डॉ.पूजा हेमकुमार अलापुरिया ३१
- बहेलिया -दामिनी सिंह ठाकुर ४४

लघुआलेख

- धनुष बाण की कहानी -विमला रस्तोगी २०

प्रसंग

- महात्मा गांधी के प्रेरक प्रसंग -हरीश चन्द्र पांडे ०९
- जब घर वाले चिंता में पड़ गए -डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव १५

कविता

- बच्चा बच्चा राम बनेगा -प्रकाश 'मनु' ०२
- लाल बहादुर -मधुर 'गंजमुरादाबादी' ०८
- जीत सत्य की होती -श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल ४९

स्तंभ

- शिशु गीत -ठा. श्रीनाथ सिंह ०७
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी ११
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक १२
- छः अँगुल मुस्कान - २२
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' २३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २८
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ३०
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी ३२
- आपकी पाती - ३३
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ३७
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३८
- पुस्तक परिचय - ४७
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१

चित्रकथा

- चाचाजी डायटिंग पर -देवांशु वत्स ३६
- खोया घोड़ा -देवांशु वत्स ३९
- दुष्ट कौन ? -संकेत गोस्वामी ४६

बौद्धिक क्रीडा

- मनोरंजक पहेलियाँ -विजयकांत मिश्रा ४२
- बताओ तो जानें -चाँद मोहम्मद घोसी ४५
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी ४८

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

रानी दुर्गावती

– डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

''दादी! हमारी दीदी ने कहा है, कल जो भी किन्हीं वीरों की गाथा याद कर के आएगा, उसे प्रार्थना सभा में सुनाने का अवसर दिया जायेगा। दादी मैंने अपना नाम लिखा दिया।'' आज शाला से आकर विहान ने दादी को बताया।

''यह तो बहुत अच्छी बात है बेटा! तो तुम किस वीर सेनानी के बारे में बताओगे, मुझे भी सुनाओ।'' दादी ने विहान का उत्साह बढ़ाते हुए कहा।

''हं...हं वो वास्तव में बात यह है दादी मुझे तो किसी वीर सेनानी के बारे में इतने अच्छे से नहीं पता, आप तो बहुत से प्रसंग जानती हैं, मुझे बताइए न मैं किस वीर की गाथा सुनाऊँ जो रोचक भी हो।''

''हम्म! तो यह बात है, क्या तुम गोंडवाना की रानी दुर्गावती की वीरता के बारे में जानते हो?''

''नहीं जानता दादी... नाम अवश्य सुना है, रानी दुर्गावती।''

''तो मैं आज तुम्हें उनकी बहादुरी के प्रसंग सुनाती हूँ, ध्यान से सुनो, तभी कल शाला में सुना पाओगे– हमारे देश में जब सुंदर, साहसी और वीरांगनाओं की बात होती है तो रानी दुर्गावती का नाम सबसे पहले आता है। ५०० वर्ष पहले ५ अक्टूबर १५२४ को उत्तर प्रदेश बाँदा के कालिंजर किले में राजपूत सम्राट कीरत चन्देल के यहाँ उनका जन्म हुआ। सम्राट कीरत चन्देल अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने महमूद गजनवी को युद्ध में मात दी तथा खजुराहो के मंदिर जो आज विश्व धरोहर के रूप में जाने जाते हैं उनका निर्माण कराया। उनकी पुत्री थीं दुर्गावती।''

''दादी! आप कहती हैं नाम के पीछे भी कहानी होती है, तो उनका नाम दुर्गावती क्यों रखा गया?''

''बहुत अच्छी बात पूछी विहान! दरअसल उनका जन्म दुर्गाष्टमी के दिन हुआ, और वे यथा नाम तथा गुण की आदर्श बनीं।''

''मैं समझा नहीं?''

''अपने नाम के अनुरूप उनमें माँ देवी दुर्गा सा तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता थी। बचपन से उन्हें वीरतापूर्ण और साहस से भरी कहानी सुनने और पढ़ने का शौक तो था ही, तीरंदाजी, तलवारबाजी, घुड़सवारी का भी बहुत शौक था। जानते हो वे हिंसक पशुओं का शिकार बड़े शौक से करती थीं। उनका अधिकांश समय अपने पिता के शिकार पर जाने व राज्य के कार्य सीखने में व्यतीत होता। उसी का परिणाम था कि वे राजकाज में दक्ष हो गईं।''

''अर्थात उन्हें आरम्भ से ही राजकाल में रुचि थी।'' विहान ने कहा।

''ठीक कहा तुमने।''

''तो क्या रानी ने विवाह भी नहीं किया?'' विहान ने जिज्ञासा व्यक्त की।

''किया न, लेकिन इसकी भी एक कहानी है, उनके पिता अपनी गुणी बेटी के लिए योग्य और एक राजपूत वर खोज रहे थे। जबकि रानी दुर्गावती दलपत शाह की वीरता और साहस से बहुत प्रभावित थीं और उन्हीं से विवाह भी करना चाहती थीं। किनतु दलपत शाह राजपूत न होकर गोंड जाति के थे अत: रानी के पिता को यह सम्बन्ध स्वीकार न था। उधर दलपत शाह के पिता संग्राम शाह जो गढ़ा मंडला के शासक थे। रानी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर उन्हें अपनी बहू बनाना चाहते थे।''

''ओह! फिर?''

''फिर, संग्राम शाह ने कालिंजर पर आक्रमण कर दुर्गावती के पिता को हरा दिया। इसके परिणाम स्वरूप राजा कीरत चन्देल को अपनी पुत्री दुर्गावती का विवाह दलपत शाह से कराना पड़ा। किन्तु विवाह के कुछ वर्ष बाद ही उनके पति दलपत शाह का निधन हो गया, उस समय उनका पुत्र वीर नारायण मात्र ५ वर्ष का था। अत: रानी ने उसे राजगद्दी का उत्तराधिकारी बना स्वयं राज्य की बाग डोर सम्हाली।''

''लेकिन दादी! इसमें तो वीरता वाली कोई बात नहीं, फिर रानी का नाम इतिहास में अमर कैसे हुआ?''

''बताती हूँ, बताती हूँ, धैर्य रखो, पति के निधन के बाद रानी दुर्गावती को बहुत संघर्षों का सामना करना पड़ा। १५५६ में सुजात खान ने रानी को एक असहाय महिला जान उनके राज्य को कब्जे में करना चाहा, लेकिन रानी ने युद्ध कर उसे हराकर साबित कर दिया कि वे कमजोर नहीं। फिर अकबर की दृष्टि रानी और उनके शासन पर पड़ी, अकबर उनके शासन को जीतकर रानी को अपने हरम में लाना (बीवी बनाना) चाहता था। जब यह सम्भव नहीं हो सका तो उसने अपने प्रधान आसफ खान को मंडला पर हमला करने भेजा।

यह एक मुश्किल लड़ाई थी क्योंकि आसफ खान के पास पर्याप्त मात्रा में प्रशिक्षित सेना और आधुनिक हथियार थे। लेकिन रानी ने हिम्मत नहीं हारी, अपने सैनिकों को कहा किसी के अधीन होकर शर्मनाक जीवन जीने से अच्छा है हम अपनी आजादी की लड़ाई लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो जाएँ, इतना ही नहीं इस युद्ध की बागडोर स्वयं रानी ने सम्हाली, जिससे सैनिकों में उत्साह बढ़ा और वे युद्ध जीत गए।

''हाँ, हमारी शिक्षिका दीदी कहती है लड़ाई हमेशा हिम्मत से लड़ी जाती है इसलिए हिम्मत कभी न हारो, आज बात समझ आई।''

''शाबास! तुम्हें बात समझ आई। रानी ने अपने १५ वर्ष के शासनकाल में लगभग ५० युद्ध किये, लेकिन दो बार आसफ खान को हराने के बाद जब तीसरी बार फिर उसने आक्रमण किया तब तक रानी के कई सैनिक वीरगति को पा गए थे। यह युद्ध जबलपुर में नरई नाले के पास हुआ। जिसमें उनका पुत्र वीर नारायण भी था, वह इस युद्ध में घायल हुआ तब भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी, बल्कि अपने सिपाही से कहकर वीर नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया।''

''वाह! बड़ी साहसी थीं रानी।''

''यही तो उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी, किन्तु इस युद्ध में रानी बुरी तरह से घायल हो चुकीं थीं। इस लड़ाई के दौरान एक तीर उनकी भुजा में आ लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। फिर युद्ध करने लगीं। तभी दूसरा तीर सीधे उनकी आँख में जा घुसा, रानी ने जैसे ही उसे निकाला, तीर तो निकल गया किन्तु उसकी नोंक रानी के आँख में ही रह गई। फिर भी रानी ने हिम्मत नहीं हारी किन्तु तीसरा तीर रानी की गर्दन के आर-पार हो गया।

तब उन्हें लगने लगा कि अब वे ये लड़ाई नहीं जीत सकेंगी। दुश्मनों के हाथों पड़ने से बेहतर लगा उन्हें कि स्वयं को समाप्त कर दूँ। अपने एक सलाहकार सैनिक से उन्होंने कहा कि तुम अपनी तलवार से मेरी गर्दन काट दो, किन्तु उस सैनिक ने ऐसा करने में असमर्थता दिखलाई तब रानी ने स्वयं अपनी ही तलवार अपने सीने में भौंक दी और देश के लिए बलिदान हो गईं।

''वाकई वीरता की अद्भुत मिसाल थीं रानी दुर्गावती दादी!'' निहान भावुक हो बोला।

''उनकी इसी वीरता को ध्यान में रख २४ जून को 'बलिदान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। एक बहादुर रानी जो मुगलों की ताकत को जानते हुए एक बार भी युद्ध करने से पीछे नहीं हटीं और अंतिम सांस

तक दुश्मनों के विरुद्ध लड़ती रहीं।

रानी दुर्गावती का शरीर मंडला और जबलपुर के बीच स्थित पहाड़ियों में जा गिरा, इसलिए वर्तमान में मंडला और जबलपुर के बीच स्थित बरेला में इनकी समाधि बनाई गई है जहाँ अभी भी लोग दर्शन के लिए जाते हैं। इसके अलावा रानी ने कई कुएँ, बावड़ी, धर्मशालाएँ बनवाई, यातायात की व्यवस्था सुगम करवाई। पर्यावरण की रक्षा हेतु पेड़-पौधे लगवाए। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने सबसे विश्वासपात्र वजीर आधारसिंह के नाम पर आधारताल तथा अपने नाम पर रानीताल भी बनवाया।''

''दादी! रानी ने आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, क्या देश ने भी उनकी स्मृति में कुछ किया?''

''बहुत अच्छा प्रश्न है यह, सभी बच्चों को यह जानना चाहिए, बल्कि वह सब देखना भी चाहिए जैसे- उनकी स्मृति को जीवित रखने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जबलपुर में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय की स्थापना की भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकिट जारी किया, इसके अलावा बुंदेलखंड में रानी दुर्गावती कीर्ति स्तम्भ, रानी दुर्गावती संग्रहालय और रानी दुर्गावती अभयारण्य हैं। जबलपुर में मदन महल आज भी स्थित हैं जो कि रानी दुर्गावती का निवास स्थान था।''

''दादी! आपने बहुत अच्छी जानकारी दी कल प्रार्थना सभा के अवसर पर मैं यह बातें मंच पर अवश्य कहूँगा। सचमुच रानी दुर्गावती इतिहास के पन्ने पर स्वर्ण अक्षरों से लिखा नाम है। हम उन्हें नमन करते हैं।''

- भोपाल (म. प्र.)

शिशु गीत

भोला और भालू

- ठा. श्रीनाथ सिंह

हुआ सवेरा मुर्गा बोला,
घर से चला टहलने भोला।

मिला राह में उसको भालू,
लगा माँगने रोटी आलू।

आलू बिकने गया हाट में,
भालू सोने गया खाट में।

टूटी खाट, गिर पड़ा भालू,
अब न चाहिए रोटी आलू।

- प्रयागराज (उ. प्र.)

कविता : जन्मदिन २ अक्टूबर

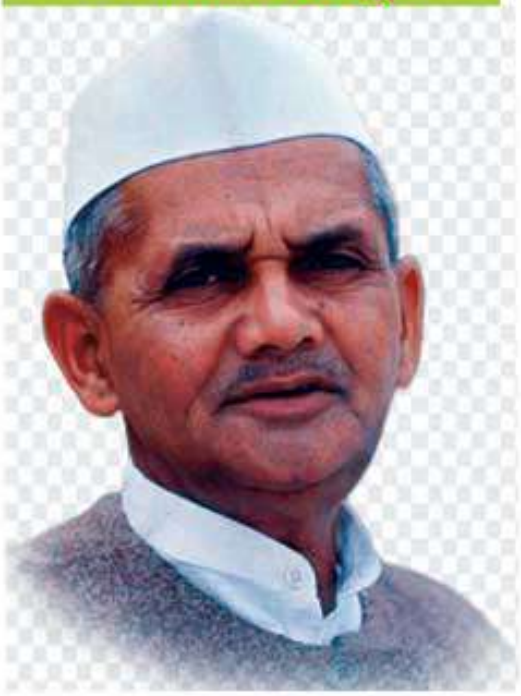

लाल बहादुर

– मधुर गंजमुरादाबादी

कोई भूल न सकता उनको,
देश-दुलारे, लाल बहादुर।
बचपन में 'नन्हें' कहलाए,
चरण हमेशा बड़े बढ़ाए।
बापू के शिष्यों में निकले,
सबसे न्यारे, लाल बहादुर।
जय जवान औ' जय किसान का,
नारा सच्चे स्वाभिमान का।
देकर चमके आसमान में,
जगमग तारे, लाल बहादुर।
वह दुर्घटना ताशकन्द की,
जिसने सारी कथा बन्द की।
दुनियाँ जान न पायी कैसे,
स्वर्ग सिधारे, लाल बहादुर?

– उन्नाव (उ. प्र.)

सबके प्यारे, लाल बहादुर।
अमर हमारे, लाल बहादुर।।
जिन्हें शास्त्री जी कहते हैं,
हम सबके मन में रहते हैं।

जन्मदिन ३१ अक्टूबर

लौहपुरुष के वचन

शक्ति के अभाव में विश्वास व्यर्थ है। विश्वास और शक्ति दोनों किसी महान कार्य के लिए आवश्यक है।

***

जब तक एक इन्सान अपने अंदर के बच्चे को बचाए रख सकता है तभी तक जीवन उस अंधकारमयी छाया से दूर रह सकता है जो इन्सान के माथे पर चिंता की लकीरें छोड़ जाती हैं।

***

लोहा भले ही गर्म हो जाए, हथौड़े को तो ठंडा ही रहना चाहिए अन्यथा वह स्वयं अपना हत्था जला डालेगा।

***

यह हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह यह अनुभव करे कि उसका देश स्वतंत्र है और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा उसका कर्त्तव्य है। उसे याद होना चाहिए कि वह एक भारतीय है और उसे इस देश के हर अधिकार है पर कुछ जिम्मेदारियाँ भी है।

महात्मा गांधी के प्रेरक प्रसंग

– हरीशचंद्र पाण्डे

महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनका जीवन सत्य अहिंसा को समर्पित रहा। आज भी सारा संसार महात्मा गांधी के जीवन से प्रेरणा ले रहा है। प्रस्तुत हैं उनके जीवन के कुछ सीखने योग्य प्रसंग।

यह बात उन दिनों की है जब महात्मा गांधी के पिता जी का स्थानांतरण पोरबंदर से राजकोट हो गया था। जहाँ गांधी जी रहते थे वहीं उनके पड़ोस में एक सफाईकर्मी भी रहता था। गांधी जी उसे बहुत पसंद करते थे।

एक बार किसी समारोह के अवसर पर गांधी जी को मिठाई बांटने का काम सौंपा गया। गांधी जी सबसे पहले मिठाई पड़ोस में रहने वाले सफाईकर्मी को देने लगे। जैसे ही गांधी जी ने उसे मिठाई दी वह गांधी जी से दूर हटते हुए बोला कि– ''मैं अछूत हूँ, इसलिए मुझे मत छुएँ।''

गांधी जी को यह बात बुरी लगी और उन्होंने उस सफाई वाले का हाथ पकड़कर मिठाई दी और उससे बोले कि– ''हम सब इंसान हैं, अछूत कुछ भी नहीं होता।'' गांधी जी की बात सुनकर उस सफाईकर्मी के आँसू निकल गये।

एक बार गांधी जी एक छोटे से गांव में पहुँचे तो उनके दर्शनों के लिए लोगों की भीड़ उमड़ी। गांधी जी ने लोगों से पूछा– ''इन दिनों आप कौन–सा अन्न बो रहे हैं? और किस अन्न की कटाई कर रहे हैं?'' तभी भीड़ में से एक वृद्ध व्यक्ति आगे आया और करबद्ध हो बोला– ''आप तो बड़े ज्ञानी हैं। क्या आप इतना भी नहीं जानते कि ज्येष्ठ (जेठ) मास में खेतों में कोई फसल नहीं होती। इन दिनों हम खाली रहते हैं।''

गांधी जी ने पूछा– ''जब फसल बोने व काटने का समय होता है, तब क्या बिलकुल भी समय नहीं होता?'' वृद्ध ने उत्तर दिया– ''उस समय तो हमें रोटी खाने का भी समय नहीं होता।''

गांधी जी बोले– ''तो क्या इस समय तुम बिलकुल निठल्ले हो और केवल गप्पें हाँक रहे हो। तुम चाहो तो इस समय भी कुछ बो और काट सकते हो।''

तभी कुछ गांव वाले बोले– ''कृपा करके आप ही बता दीजिए कि हमें क्या बोना और काटना चाहिए?''

गांधी जी ने गंभीरतापूर्वक कहा– ''आप लोग **कर्म बोइए और आदत को काटिए, आदत को बोइए और चरित्र को काटिए, चरित्र को बोइए और भाग्य को काटिए**, तभी तुम्हारा जीवन सार्थक हो पाएगा।''

इसी तरह एक बार साबरमती आश्रम की एक घटना है। एक दिन रात को एक चोर आ गया। चोर नासमझ था, नहीं तो आश्रम में चुराने के लिए भला क्या था! संयोग से कोई आश्रमवासी जाग गया उसने धीरे से कुछ और लोगों को जगा दिया। सबने मिलकर चोर को पकड़ लिया और कोठरी में बंद कर दिया। व्यवस्थापक ने प्रातः यह खबर बापू को दी और चोर को उनके सामने पेश किया। बापू ने दृष्टि उठाकर उसकी ओर देखा। वह युवक सिर झुकाए आतंकित खड़ा था कि बापू उससे नाराज हैं और हो सकता है कि उसे पुलिस को सौंप दें। बापू ने जो किया, उसकी तो वह स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता था।

बापू ने उससे पूछा– ''क्यों तुमने नाश्ता

किया? कोई उत्तर न मिलने पर उन्होंने व्यवस्थापक की ओर प्रश्नभरी मुद्रा में देखा।

व्यवस्थापक ने कहा– ''बापू! यह तो चोर है, नाश्ते का प्रश्न ही कहाँ उठता है?''

बापू का चेहरा गंभीर हो गया। दु:ख भरे स्वर में बोले– ''क्यों क्या यह मनुष्य नहीं है? इसे ले जाओ और नाश्ता कराओ।'' व्यवस्थापक, जिसे चोर मानकर लाए थे, वह अब एक क्षण में मनुष्य बन गया था। उसकी आँखों में प्रायश्चित के अश्रू बह रहे थे। करुणा और प्रेम ने गांधी को बापू बना दिया।

एक और घटना है जब महात्मा गांधी से एक मारवाड़ी सेठ भेंट के लिए आये। वह बड़ी-सी पगड़ी बाँधे थे और मारवाड़ी वेशभूषा में थे। बातचीत के बीच उन्होंने पूछा– ''गांधी जी! आपके नाम पर लोग देश भर में गांधी टोपी पहनते हैं और आप इसका उपयोग तक नहीं करते, ऐसा क्यों?''

गांधी जी मुस्कराते हुए बोले– ''आपका कहना बिल्कुल ठीक है, पर आप अपनी पगड़ी को उतारकर तो देखिये। इसमें कम से कम बीस टोपियाँ बन सकती हैं। जब बीस टोपियों के बराबर कपड़ा आप जैसे धनी व्यक्ति अपनी पगड़ी में लगा सकते हैं तो बेचारे उन्नीस आदमियों को नंगे सिर रहना ही पड़ेगा। उन्हीं उन्नीस में मैं भी एक हूँ।'' गांधी जी का उत्तर सुनकर सेठ जी को कुछ कहते न बना। पर गांधी जी ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा– ''**अपव्यय, संचय की वृत्ति अन्य व्यक्तियों को अपने हिस्से से वंचित कर देती है।** तो मेरे जैसे अनेक व्यक्तियों को टोपी से वंचित रहकर उस संचय की पूर्ति करनी पड़ती है।'' यह बहुत ही गहरी बात थी।

बात उन दिनों की है जब गांधी जी अल्फ्रेड हाईस्कूल में अपनी आरंभिक शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। एक बार उनके विद्यालय में निरीक्षण के लिए निरीक्षक आये हुए थे। उनके शिक्षक ने छात्रों को हिदायत दे रखी थी कि निरीक्षक पर आप सबका अच्छा प्रभाव पड़ना चाहिए। जब निरीक्षक गांधी जी की कक्षा में आये तो उन्होंने बच्चों की परीक्षा लेने के लिए छात्रों को पांच शब्द बताकर उनके वर्तनी लिखने को कहा। निरीक्षक की बात सुनकर सारे बच्चे वर्तनी लिखने में लग गये।

जब बच्चे वर्तनी लिख रहे थे कि शिक्षक ने देखा कि मोहनदास (गांधी जी) ने एक शब्द की वर्तनी गलत लिखी है। उन्होंने मोहनदास को संकेत कर बगल वाले छात्र से नकल कर वर्तनी ठीक लिखने को कहा।

किन्तु मोहनदास ऐसा कहाँ करने वाले थे। उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्हें नकल करना अपराध लगा। निरीक्षक के जाने के बाद उन्हें शिक्षक से डांट खानी पड़ी।

उन्हीं दिनों की एक दूसरी घटना है। गांधी जी के बड़े भाई कर्ज में फंस गये थे। अपने भाई को कर्ज से मुक्त कराने के लिए गांधी जी ने अपना सोने का कड़ा बेच दिया और उसके पैसे अपने भाई को दे दिए।

मार-खाने के डर से गांधी जी ने अपने माता-पिता से झूठ बोला कि कड़ा कहीं गिर गया है। किन्तु झूठ बोलने के कारण गांधी जी का मन स्थिर नहीं हो पा रहा था। उन्हें अपनी गलती का अनुभव हो रहा था और उनकी आत्मा उन्हें बार-बार यह बोल रही थी कि झूठ नहीं बोलना चाहिए। गांधी जी ने अपना अपराध स्वीकार किया और उन्होंने सारी बात एक कागज पर लिखकर पिता जी को बता दी। गांधी जी ने सोचा कि जब पिता जी को मेरे इस अपराध की जानकारी होगी तो वह उन्हें बहुत पीटेंगे। किन्तु पिता जी ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। वह बैठ गये और उनकी आँखों से आँसू आ गये। गांधी जी को इस बात से बहुत चोट लगी। उन्होंने अनुभव किया कि प्यार हिंसा से अधिक असरदार दंड दे सकता है।

– हल्द्वानी (नैनीताल)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

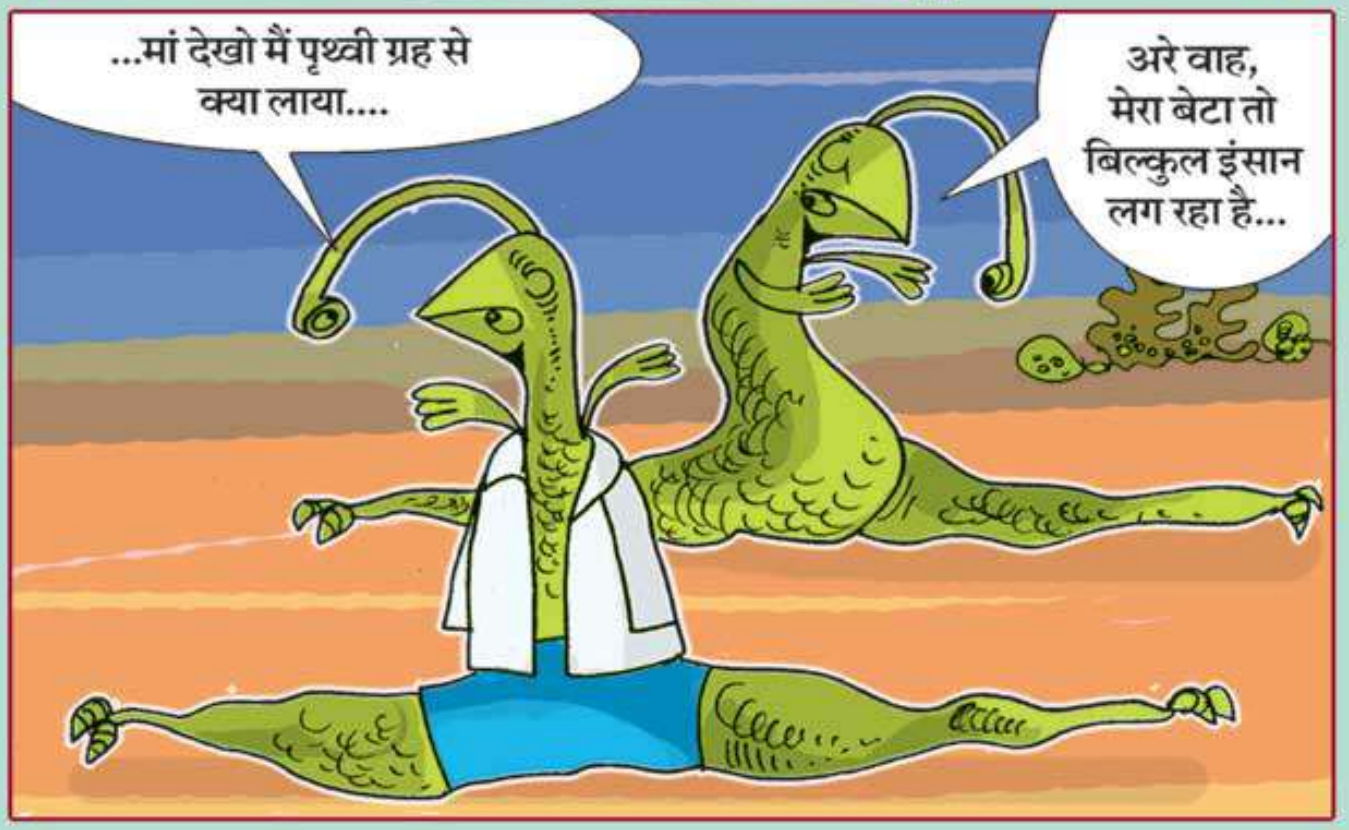

कपिला गाय का दूध

– तपेश भौमिक

एक बार महाराज कृष्णचन्द्र को एक कपिला गाय की भनक लगी। उनके ही राज्य में एक किसान के पास वह गाय थी। उस गाय के स्वादिष्ट दूध की बहुत चर्चा हो रही थी। महाराज ने उस गाय के दूध का स्वाद लेने की इच्छा जाहिर की। शीघ्र ही एक संवाद वाहक को किसान के पास दौड़ा दिया गया। जब उसने किसान को महाराज के मन की बात कही तो वह भी प्रसन्न हो गया। किसान ने सोचा कि इसी बहाने उसे राज–दरबार में जाने का अवसर मिलेगा। फिर महाराज प्रसन्न हो गए तो उसका जीवन भी बदल सकता है।

दूसरे ही दिन किसान कलश भर कपिला गाय का दूध लेकर राजसभा में पहुँचा। जब महाराज ने दूध पिया तो वे बहुत प्रसन्न हुए। एक–एक प्याली दूध सभासदों को भी पीने का अवसर मिला। सबने दूध की भूरि–भूरि प्रशंसा की। राजसभा में सबके मुख पर मुस्कान खेल गई लेकिन केवल मंत्री के माथे पर बल पड़ गए।

वह किसी भी तरह उस गाय को हथियाना चाहता था। उसने तुरंत किसान को कहा कि वह उस गाय को उसे बेच दे। लेकिन गोपाल को यह बात जँची नहीं। उसने तभी यह युक्ति खड़ी कर दी कि मंत्री महाराज से आज्ञा लिए बिना कैसे उस गाय को खरीद सकता है। इस पर मंत्री ने कहा कि देखो गोपाल तुम मेरी हर बात पर प्रश्न खड़े करते हो, यह ठीक नहीं है। दोनों में नोक–झोंक होने लगी तो महाराज इसका आनन्द उठाने लगे। उन्होंने गोपाल से परामर्श लेकर मुँहमांगा धन देकर गाय को दूसरे ही दिन खरीद लिया। उधर मंत्री गोपाल को जलती आँखों से घूरता हुआ दाँत पीसता रह गया।

अब ग्वाला सुबह–सुबह दूध दुह कर रसोई में पहुँचा देता तो शीघ्र ही रसोईया उसे पतीली में उबाल कर कुछ देर के लिए रख देता। उस पर हल्की–सी लाल छाली (मलाई) पड़ने लगती। ठीक उसी समय रसोईया दूध की पतीली लेकर दरबार में पहुँच जाता। महाराज पतीली को औंधा कर गटा–गट जितना मन होता दूध पी लेते। फिर जो कुछ भी बचता उससे एक–एक प्याली मंत्री और गोपाल को मिलता। फिर बचने पर ही अन्य दरबारियों को भी मिलता। मंत्री अपने आप को उच्च पदस्थ मान कर यह सोचता कि उसका स्थान महाराज के बाद ही है। अत: उसे अधिक मिलना चाहिए। अन्य दरबारियों के समान मिलना अपनी हेटी समझता।

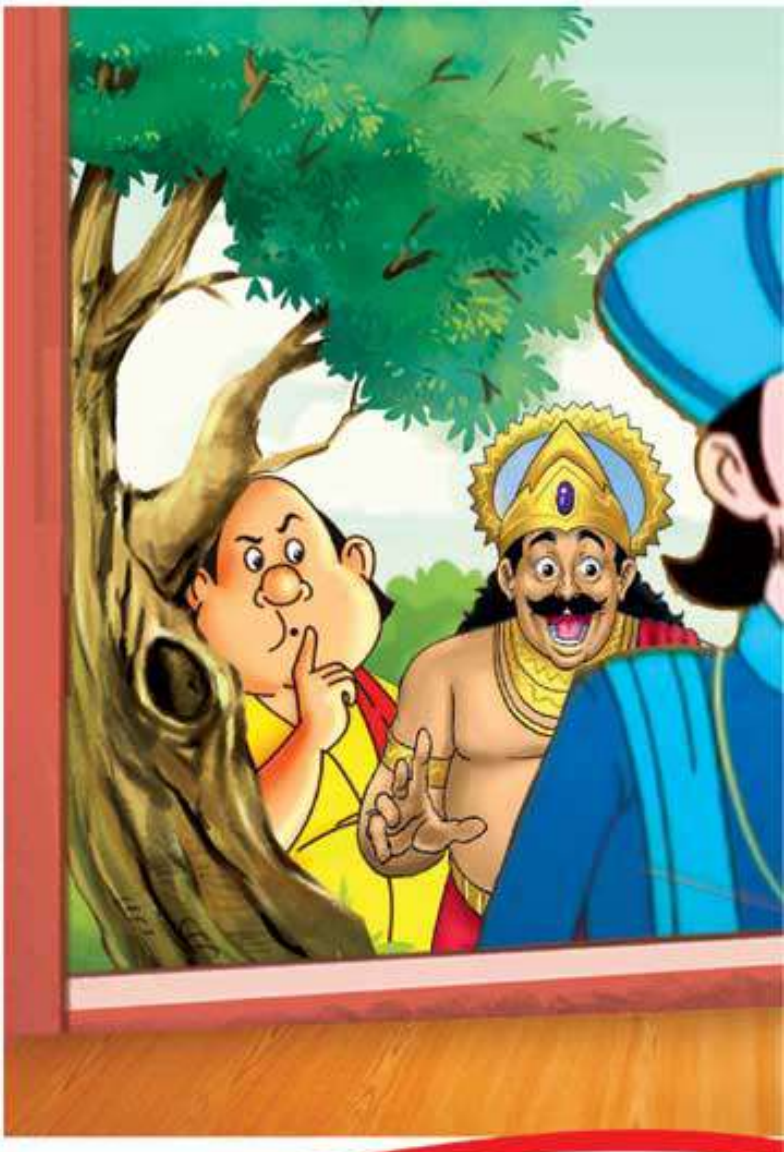

दो-तीन दिनों तक महाराज खूब छककर अमृत समान दूध का सेवन करने लगे। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि मंत्री किसी काम से रसोईये के पास गया। उसने देखा कि वह दूध औटा रहा है, जिससे भीनी-भीनी खुशबू आ रही है। उसका मन मचल गया। उसने रसोईये से कहा कि वह बाग में जाकर कुछ पके आम तोड़कर लाए ताकि महाराज को आम के साथ दूध का सेवन कराया जा सके।

रसोईया चला गया। इतने में मंत्री ने पटसन की एक लंबी संटी उठाई और बाहर जाकर खिड़की के रास्ते एक छोर दूध में डाल कर दूसरे छोर से दूध चूस लिया। इससे पतीली में दूध आधा हो गया। उसने तुरंत कुएँ से पानी खींच कर पतीली में उतना पानी डाल दिया जितना उसने दूध पी लिया था। पानी मिलाने के कारण दूध का असली स्वाद और गाढ़ापन जाता रहा।

रसोईये ने यथावत दूध की पतीली उठाकर दरबार की ओर कदम बढ़ाया। दूध की छाली ऊपर तैर रही थी जिसके कारण उसने दूध के रंग को समझ न पाया। महाराज ने दूध का गिलास मुँह में लगाया तो उन्हें दूध का स्वाद एकदम फीका लगने लगा। सारे सभासद भी महाराज से एकमत थे। रसोईये का भी दिमाग ठनका कि आखिरकार ऐसा कैसे हुआ? वह महाराज के लिए लाये आमों को रखकर डर के मारे काँपता हुआ चला गया। दूसरे दिन भी वही हुआ जो पहले दिन हुआ था। मंत्री ने कहा कि हो सकता है कि गाय को कोई बीमारी हो गई हो, जिससे दूध का स्वाद बिगड़ गया हो।

इस बीच एक दिन मंत्री ने गोपाल को डांट पिलाई कि वह राजमहल की कोई खबर ही नहीं रखता है। केवल गोल-मटोल बातें बनाकर महाराज से मुफ्त में वेतन लेता है। उसे रसोई घर की खबर रखनी चाहिए। ऐसा कहकर मंत्री ने यह चाल चली की किसी को उसकी ओर अँगुली उठाने का अवसर ही न मिले।

उधर गोपाल को मंत्री पर संदेह पहले से ही था। उसने अपने नन्हें-मुन्ने मित्रों को रसोई घर के पास आम के बगीचे में जमीन पर पड़े हुए आम चुनते हुए देखा। उसने उन्हें कानो-कान यह बताया कि कभी मंत्री इधर आता है तो वे खेलते-खेलते उसकी ओर दृष्टि रखे।

एक लड़के ने रसोई घर के पास एक पेड़ की ओट में छिपकर देख लिया कि मंत्री पटसन की संटी के सहारे पतीली से दूध-चूसकर पी लेता है। फिर कुएँ से पानी लेकर मिला देता है तब जब रसोईया माली से बगीचे आम तुड़वाता है। उधर मंत्री ने महाराज से इस बात की शिकायत कर दी कि उसने गोपाल को इस बीच एक दिन रसोईघर में भेजा था।

हो न हो उसने ही कोई करतूत चला रखी हो। वह पेटू तो है ही। महाराज मंत्री की बातों में आकार गोपाल को खूब बुरा भला कहा और सतर्क करते हुए कहा कि उन्होंने गुप्तचर लगा दिया है कि आखिरकार रहस्य क्या है?

गोपाल ने यह बात सुनकर केवल इतना भर कहा कि महाराज किसी भी निर्णय को लेने से पहले भली-भाँति जाँच ले कि आखिरकार होता क्या है। क्या गाय बीमार है या कोई दूध निकालकर उसमें पानी मिला देता है।

गोपाल ने उस दिन घर जाकर कुछ लाल सूखी मिर्ची पीस ली और मंत्री के पहुँचने से पहले ही राज रसोई में पहुँच गया। उसने देखा कि रसोईया दूध औटा कर पतीली को नीचे रख कर बगीचे में चला गया।

गोपाल ने आराम से पीसी मिर्ची दूध में अच्छी तरह करछी से मिला दी। जिससे दूध का रंग ऐसा हो गया कि वह औटाते-औटाते लाल हो गया हो। रसोइये ने आकर पतीली के ऊपर छाली को देखकर खुश हो गया क्योंकि छाली गाढ़े गुलाबी रंग की बनी थी। इसका मतलब यह था कि दूध बहुत ही स्वादिष्ट होगा। गोपाल अब एक पेड़ के पीछे छुप गया। यथावत थोड़ी ही देर में मंत्री उधर आ निकला और लुकता-छिपता यह देखकर विश्वास कर लिया कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है।

उसने बड़े आराम से खिड़की के रास्ते पटसन की संटी घुसाई और बड़े जोर से दूध को सुड़का। अब मिर्ची के तीखेपन ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया। मंत्री रसोई से बाहर हाय-तौबा करता हुआ कुत्ते जैसा जीभ लपलपा कर चिल्ला रहा था।

जीभ लाल हो गई थी। वह गोपाल को गलियाँ दे रहा था और उछल रहा था। उसे यह पक्का विश्वास हो गया था कि यह काम गोपाल का ही है। इतने में राजसभा तक सूचना चली गई।

महाराज भी दौड़े-दौड़े आ गए तो उन्हें यह समझते देर न लगी कि प्रकरण क्या है। अब मंत्री को दण्ड स्वरूप पूरा दूध पिलाया गया तो दो दिन तक वह घर से मैदान और मैदान से घर दौड़ता रहा। राजसभा में हो-हो इतनी होने लगी कि दो दिन तक राज-काज ठप्प हो गई।

- कूचबिहार (पं. बंगाल)

हमारे गौरव विद्या भारती के पूर्वछात्र

चन्द्रयान अभियान के वैज्ञानिक

'चंद्रयान-३' प्रक्षेपण दल का भाग बने ४ वैज्ञानिकों ने विद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिरों से पढ़ाई की है।

इसरो वैज्ञानिक **अतुल निगोताया** ने वर्ष १९९५ में सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, झाँसी रोड से हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की।

इसी प्रकार वैज्ञानिक **अंकुर त्रिगुणायक** ने वर्ष १९९६ में सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज उरई से हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की।

वैज्ञानिक **सोहन यादव** आर्बिटर इंटिग्रेशन और टेस्टिंग टीम में शामिल हैं। तपकरा स्थित शिशु मंदिर में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की।

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा कस्बे के **वैभव उपाध्याय** ने भी इस अभियान में विशेष भूमिका निभाई है। वैभव ने प्रोजेक्ट मैनेजर और मल्टीमीटर डिजाइनिंग इन्चार्ज के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं। वैभव ने विद्या भारती के तत्वावधान में आदर्श विद्या मंदिर शाहपुरा में प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की है।

एक क्रांतिकारी - अशफाक उल्ला खाँ

जब घर वाले चिंता में पड़ गए

– डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खाँ

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की तरह अशफाक उल्ला खाँ भी बड़े क्रांतिकारी थे। वे अपनी गतिविधियों से अँग्रेज-अधिकारियों को परेशान करते रहते थे। यों अशफाक उल्ला के बड़े भाई रियासत उल्ला, रामप्रसाद बिस्मिल के पक्के मित्रों में से थे। क्रांतिकारी विचारधारा के कारण अशफाक उल्ला भी निरन्तर बिस्मिल के सम्पर्क में आए और उनके परम सहयोगी बन गए।

९ अगस्त वर्ष १९२५ को रामप्रसाद बिस्मिल के इशारे पर कांकोरी स्टेशन पर सकारी खजाना लूट कर अँग्रेजों को खुली चुनौती दी गई। इस क्रांतिकारी दल में अशफाक उल्ला भी शामिल थे।

एक बार अशफाक उल्ला बहुत बीमार हो गए। बुखार की स्थिति में वे बार-बार 'राम-राम' कह रहे थे। अशफाक के घर वालों को बड़ी चिन्ता हुई। कहीं अशफाक उल्ला ने हिन्दू-धर्म तो नहीं अपना लिया। अशफाक के एक पड़ौसी ने उनके घर वालों को समझाया- ''नहीं ऐसी बात नहीं है। ये बीमारी में अपने मित्र रामप्रसाद बिस्मिल को याद कर रहे हैं।''

तब कहीं रामप्रसाद बिस्मिल को बुलाया गया। रामप्रसाद बिस्मिल ने अशफाक उल्ला के हाथों को अपने हाथों में लेकर दो-तीन बार अशफाक को पुकारा तो तुरंत ही अशफाक उल्ला में आँखें खोल दीं। दोनों मित्र, एक-दूसरे को देखकर अति प्रसन्न हुए। दोनों की मित्रता, इस घटना के बाद और भी मजबूत होती गई।

काकोरी कांड में जब फाँसी की सजा सुनाई गई तो लोगों ने कहा- रामप्रसाद तो काफिर और कट्टर आर्य समाजी हैं। तब अशफाक उल्ला ने इस बात का जोरदार विरोध किया। वे बोले- रामप्रसाद बिस्मिल काफिर और कट्टर नहीं बल्कि सच्चे हिन्दुस्तानी भारत माँ के परम देशभक्त हैं।

– ग्वालियर (म. प्र.)

मित्रता

धर्म, मित्रता है बड़ा, माने जात न पाँत।
सारी आड़ बिगाड़ कर, मित्र मिलाते हाथ।।

माँ की सीख

– पवन कुमार वर्मा

ऋतेश आजकल बड़ी–बड़ी बातें करने लगा था। उसकी हवा–हवाई बातों को पिता जी बिल्कुल पसन्द नहीं करते थे। उन्हें तब और बुरा लगता था, जब ऋतेश अपने मित्रों से उनकी तुलना करने लगता था।

''बेटा ऋतेश! मेरे कार्यालय जाने का समय हो गया है। जरा मेरी स्कूटर साफ कर देना!'' एक दिन पिता जी ऋतेश से बोले।

''क्या पिता जी? आखिर आप कब तक इस पुराने स्कूटर पर चलते रहेंगे? मुझे तो इसको देखकर अब शर्म आती है। इसे किसी को दान में दे दीजिये न और एक नई बाइक ले लीजिए!'' ऋतेश बोला और फिर उन्हें नई–नई बाइक के बारे में समझाने लगा।

''बेटा! जब मेरी स्कूटर अच्छी–खासी चल रही है तो फिर मुझे नई बाइक की क्या आवश्यकता है? रहने दो! मैं स्वयं ही साफ कर लूँगा!'' पिता जी बोले! उनकी बात सुनकर ऋतेश झुंझला गया और पैर पटकते हुए वहाँ से चला गया! पिता जी की यह बात उसके लिये नई नहीं थी।

कुछ दिनों से दादी गाँव जाने की जिद कर रही थीं। पिता जी उन्हें अपनी कार से ले जाना चाहते थे। लेकिन दादी थीं कि बस में जाना चाहती थीं। पिता जी उनकी बात मान भी गये थे। लेकिन ऋतेश को यह बड़ा अटपटा लग रहा था। जब घर में कार है तो फिर बस में क्यों?

''दादी! आखिर आपको कार में जाने में क्या परेशानी है?'' एक दिन ऋतेश दादी से पूछ बैठा!

''जब बस गाँव तक जाती है तो फिर कार में क्यों?'' दादी ने हँसते हुए उल्टा ऋतेश से ही पूछा।

''दादी! आप आराम से घर पर ही कार में बैठकर सीधा गाँव के घर तक पहुँच जायेंगी!'' ऋतेश ने उन्हें समझाने का प्रयास किया।

''बेटा! तुम्हारी बात ठीक है! लेकिन इसके लिये तुम्हारे पिता जी को छुट्टी लेनी होगी! और गाँव कोई पास तो है नहीं! पिता जी को इतनी दूर तक कार चलानी होगी! थक नहीं जायेगा मेरा बेटा! फिर उसे वहाँ से वापस भी लौटना होगा, वह भी अकेले! न बाबा न! मैं तो बस में ही जाऊँगी! बस में लोगों से बातें करते मैं आराम से चली जाऊँगी। और हाँ! पेट्रोल भी तो महंगा हो गया है?'' दादी बोले जा रही थीं।

''आप लोगों को कौन समझाये?'' ऋतेश बुदबुदाते हुए चला गया।

आज दादी को जाना था। पिता जी उन्हें बस–स्टॉप तक छोड़ने जाने वाले थे! दादी के साथ उनका

सामान भी था, इसलिये पिता जी ने आज कार निकाल ली थी।

''दादी! मैं भी आपके साथ बस-स्टॉप तक चलूँ?'' ऋतेश ने दादी से पूछा! ''हाँ-हाँ! चल बेटा!'' दादी उसे पुचकारते हुए बोलीं।

गाँव जाने वाली बस खड़ी थी! पिता जी ने दादी का सामान बस में ठीक से रखवा दिया! उनका टिकट बनवा कर उन्हें दे दिया। साथ ही बस-ड्राइवर को समझा भी दिया कि वे दादी को आराम से उतारेंगे।

दादी बस में चढ़ने वाली थीं, तभी पिता जी ने उनके सामने हाथ फैला दिया! दादी ने अपने बटुए से एक रुपये का सिक्का निकाला और मुस्कुराते हुए पिता जी के हाथ पर रख दिया! पिता जी ने पैसे संभाल कर रख लिये! ऋतेश को कुछ समझ में नहीं आया!

बस चल पड़ी! दादी अपनी सीट पर बैठ गयी थीं। थोड़ी ही देर में बस उनकी आँखों से ओझल हो गई। ऋतेश के साथ कार में बैठ गया और घर की ओर चल पड़ा।

''पिता जी! आप अब भी दादी से पैसा माँगते हैं? और दादी ने भी एक रुपया दिया! इसमें क्या मिलेगा?'' ऋतेश ने हँसते हुए पिता जी से पूछा।

''तू नहीं समझेगा बेटा! इसमें माँ की सीख है! उनकी सीख मैं भूल न जाऊँ इसलिये मैं उनसे अब भी पैसे माँगता हूँ! और माँ भी! इस पैसे के बारे में कभी भी पूछ सकती है। इसलिए इसे मैं बहुत संभाल कर रखता हूँ! बचपन से ही माँ ने छोटी-छोटी चीजों को संभाल कर रखना सिखाया है!

ऋतेश ने देखा पिता जी की आँखों में आँसू थे! अब उसे समझ में आया कि पिता जी बिना आवश्यकता कोई खर्च क्यों नहीं करते?

- वाराणसी (उ. प्र.)

'देवपुत्र' के मानद संपादक साहित्य अकादमी के पुन: निदेशक

'देवपुत्र' के मानद संपादक डॉ. विकास दवे मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक के रूप में आगे भी मार्गदर्शन करते रहेंगे। मध्यप्रदेश सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा उन्हें पुन: अगामी ३ वर्षों के लिए मनोनीत किए जाने पर साहित्य जगत में हर्ष व्याप्त है। देवपुत्र परिवार की ओर से डॉ. विकास दवे को हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ।

चन्द्रमा पर चन्द्रयान

– सनत कुमार

उस चन्द्रयान का नाम चन्द्रयान–३ था उसका लैंडर विक्रम था। उसके रोवर का नाम प्रज्ञान था। वह प्रज्ञान को साथ लेकर चन्द्रमा पर खोज के अभियान में निकला था। उसकी गति बहुत ही तेज थी। वह मानव रहित था। अंतरिक्ष से गुजरता हुआ अपने लक्ष्य तक पहुँच चुका था। लेकिन अभी चन्द्रमा के ऊपर ही चक्कर लगा रहा था। उसे वहाँ पर उचित स्थान की तलाश थी। ठीक स्थान पर जैसे ही आदेश मिला। धीरे–धीरे वह नीचे उतर गया और सम्भलकर खड़ा हो गया।

चन्द्रयान ने चन्द्रमा के दक्षिणी भाग की भली भाँति पहचान कर ली। चारों ओर दृष्टि घुमायी। उसे विश्वास हो गया कि चन्द्रमा यही है और एकदम सही है। अपनी भूमि पर नये चन्द्रयान को देखकर चन्द्रमा खुशी से फूला नहीं समाया। उसने बातों की झड़ी लगाते हुए कहा, ''आओ मित्र! मैं तुम्हारा हार्दिक स्वागत करता हूँ। शायद तुम पृथ्वी ग्रह से आये हो। वहाँ से यहाँ तक की दूरी तीन लाख चौरासी हजार चार सौ तीन किलोमीटर है। तुम्हें रास्ते में कोई परेशानी तो नहीं हुई?''

''मित्र! मैं पृथ्वी से ही आया हूँ। मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। मुझमें आने–जाने के लिये पर्याप्त ईंधन है। मैंने अन्तरिक्ष की पलायन वेग रेखा को जैसे ही पार किया कि मुझ पर तुम्हारी गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रभाव पड़ गया और यहाँ उतरने में सफलता मिल गयी।'' चन्द्रयान का उत्तर था।

''ओह गजब! मतलब तुम्हें और तुम्हारे भेजने वालों को मेरे बारे में काफी जानकारी है। है न?'' चन्द्रमा ने कहा।

''हाँ मित्र चन्द्रमा! तुम्हारी प्रकृति का अध्ययन करके हैं बहुत जानकारी। फिर भी तुम्हारे बारे में और जानना है। वैसे तुम हमारे पुराने संबंधी हो।'' चन्द्रयान बोला।

''संबंधी! कैसा संबंध?''

''हमारे पृथ्वी के बच्चे तुम्हें चन्दामामा बोलते हैं। वहाँ की माताएँ अपने बच्चों को लोरी गीत सुनाती हैं– ''चन्दामामा दूर के, पुए पकाए बूर के, आप खायें थाली में, मुन्ना को दें प्याली में।'' हम पृथ्वीवासी तुम्हारी खोज–खबर न लें। पुख्ता जानकारी न रखें तो कौन रखेगा?''

''ऐसा क्या! बहुत अच्छा!''

''तुम तो हमारी पृथ्वी के उपग्रह हो। तुम्हारे और हमारे धरातल में कुछ समानताएँ हैं। पर तुम्हारी मिट्टी में बारूदी गंध है। दोनों की आकृति गोलाकार है। उस पर भी हमारी पृथ्वी से तुम इक्यासी गुना छोटे हो और साढ़े चार अरब वर्ष पुराने हो।'' चन्द्रयान ने कहा।

उसकी बातों से चन्द्रमा भावुक हो गया। चन्द्रमा आगे बोला– ''प्यारे मित्र! तुम्हारी बोली मेरे मन को बहुत भा रही है। मुझे लोग क्या कहते हैं? तुम बताना जारी रखो न!''

''हाँ! क्यों नहीं। यह तो मेरा कर्त्तव्य है। शशि, इन्दु, सोम, राकेश, मयंक, शशांक, रजनीपति, तारानाथ, सुधाकर, शीतांशु, अंशुमाली, मून, चांद, चंदा आदि तुम्हारे बहुत से नाम हैं। तुमसे जो प्रकाश निकलता है उसे पृथ्वीवाले 'चांदनी' कहते हैं। महीने में एक बार ही तुम पूरा प्रकाशित होते हो। उस दिन को 'पूर्णिमा' कहते हैं। जबकि अप्रकाशित को 'अमावस्या'

की रात। तुम्हारी घटती-बढ़ती आकृतियों को 'चन्द्रकलाएँ' कहा जाता है। बढ़ता रूप 'शुक्ल पक्ष' और घटता रूप 'कृष्ण पक्ष' कहलाता है। तुम भी अपने अक्ष पर घूमते रहते हो।'' चन्द्रयान बोला।

''अँय! इधर मुझे पता ही नहीं चलता।''

''चन्द्रमा मित्र! तुम्हें अपने अक्ष पर घूमने में लगभग उन्तीस दिन लगते हैं। पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाने में लगभग सत्ताईस दिन लगते हैं। तुममें और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल में तो छः गुना अन्तर है। तुम पर हमारे पृथ्वी ग्रह में कई कहानियाँ, गीत और कविताएँ हैं। धार्मिक मान्यताएँ हैं। तुम चन्द्रदेवता के रूप में पूजित हो। तुममें पवित्रता है।''

''मित्र चन्द्रयान! मैं तुम्हें चाहकर भी कुर्सी या सोफे पर बिठा नहीं सकता। चाय-पानी, समोसा-पकौड़ा और टॉफी-चॉकलेट के लिये पूछ नहीं सकता। क्योंकि मेरे यहाँ हवा नहीं है। जल हो सकता है पर धरती जैसे रूप में नहीं है। खाने की चीजें नहीं हैं। उल्टी परिस्थितियों में यहाँ जीवन नहीं है। मुझमें इतना हल्कापन है कि तुम्हारी पृथ्वी का एक सौ बीस किलो वजन का आदमी चन्द्रमा में आकर केवल बीस किलो का हो जाता है। अच्छा, मैं यह जान सकता हूँ कि तुम मेरे दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र में आये क्यों हो?''

चन्द्रमा के इस प्रश्न पर चन्द्रयान को बताने में संकोच हुआ। लगा कि कहीं चन्द्रमा उससे नाराज न हो जाये। उसने इतना ही कहा, ''मित्र! पृथ्वी में चर्चा सुनने को मिलती है कि चन्द्रमा में एलियन-वेलियन रहते हैं। जब वहाँ हवा-पानी-भोजन ही नहीं है, तब वहाँ के बेचारे जीवों को जीने में बड़ी तकलीफ होती होगी। इसी की जानकारी लेनी थी। साथ में तुमसे और एलियनों से भी पक्की मित्रता करनी थी। इसलिये यहाँ चला आया।''

तब चन्द्रमा ने स्पष्ट किया, ''चन्द्रयान! तुम मेरे मित्र हो। कहने में डरो मत। मुझे सब ज्ञात है। तुम्हारे देशवासी मुझ पर बड़ा लगाव रखते हैं। तुम्हारा पहला भाई भी वर्ष दो हजार आठ में आया था। उसने यहाँ बर्फ के एक टुकड़े की खोज की थी। तुम लोगों को यहाँ जीवन की तलाश है। मानव-बस्ती बसे। मेरा अकेलापन दूर हो। मेरी भूमि के खनिजों का कुछ उपयोग हो। मुझे प्रसन्नता होगी। तुम तो शानदार कैमरा लेकर आये हो। मेरी फोटों खींचो न।''

''हाँ! क्यों नहीं। आओ तुरन्त खींच देता हूँ। तैयार। इधर कैमरा की ओर देखो। मुस्कराओ। एएए.... करर खटाक। लो भई मैंने खींच दीं तुम्हारी फोटुएँ। तुम्हारी अनुमति हो तो इन्हें अपने इसरो केन्द्र को भेज दूँ?'' ''बेशक भेज दो। वे भी मेरी विशेताएँ बताती फोटुएँ देखकर प्रसन्न हो जायेंगे। हा हा हा हा।'' चन्द्रमा की उजली हँसी देखकर भी हँस पड़ा।

''मित्र! मेरी भूमि थोड़ी उबड़-खाबड़ है। कई स्थानों पर गड्ढे हैं। तुम्हारे रोवर को समझा देना कि वह इधर-उधर सावधानी से आये-जाये। वह यहाँ सब कुछ देखने और खोजने के लिये स्वतंत्र है।'' चन्द्रमा बोला। तब उसके उत्तर में चन्द्रयान ने हामी भर दी।

समय के सुहावने पल व्यतीत हो रहे थे। उस समय चन्द्रमा ग्रह में शाम से रात होने वाली थी। दोनों मित्रों ने अपने हाथ जोड़े। बातचीत समाप्त की। फिर प्रसन्नता से अपने-अपने कामों में लग गए।

(चन्द्रयान ३ के प्रक्षेपण की घटना का कहानी रूपांतरण करते समय लेखन ने मानवीकरण का सहारा लिया है।)

- रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

लघु आलेख

धनुष बाण की कहानी

– विमला रस्तोगी

तीर कमान को ही धनुष–बाण कहते हैं। इसका उपयोग बहुत पुराने समय से होता आया है। तब शत्रुओं और भयानक जानवरों को मारने का प्रमुख साधन तीर कमान ही होता था।

तुम जानते हो न कि रामचन्द्र जी भी अपने साथ हमेशा धनुष–बाण रखते थे। वह धनुर्विद्या में निपुण थे। उन्होंने अनेक राक्षसों को तीर से मार गिराया था। रावण भी उनके तीर से ही मरा था। आओ हम तुम्हें धनुष–बाण के बारे में कुछ बताए।

धनुष–बाण का विकास होने से पहले मानव नाखून, दांत तथा मुट्ठी से पशुओं को मारता था। बाद में वह पेड़ों की टहनियों का उपयोग करने लगा। उसके बाद उसने पत्थर से हथियार बनाने शुरू किए जो बहुत भद्दे होते थे। धीरे–धीरे उसने नुकीले हथियार बनाने की कोशिश की। सिन्धु–घाटी की खुदाई से भाले, तीर, कुल्हाड़ी तथा हंसिये मिले जो राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में सुरक्षित हैं। इस समय के बाण तांबे या कांसे के बने हैं। इससे पता चलता है कि उस समय लोग लोहे से अपरिचित थे।

वैदिक काल में धनुष–बाण का उपयोग बहुत अधिक बढ़ गया। प्राचीन साहित्य में कई ऐसी कथाएँ मिलती हैं। जिनमें वीरों ने अपने धनुष–बाण के करतब दिखाए हैं जैसे द्रोपदी की स्वयंवर सभा में अर्जुन ने मछली की आँख में तीर मारा था तथा एकलव्य ने अपने सधे हुए निशाने से अर्जुन के कुत्ते को बाणों से बींध दिया था।

अर्जुन के धनुष को 'गांडीव' और शिव के धनुष को 'पिनाक' कहते हैं। धनुष सोना, चांदी, तांबा, इस्पात, रांग और लकड़ी के बनते थे। रेशम के धागे से बनाई गई डोरी (प्रत्यंचा) अच्छी मानी जाती थी। बाणों के 'फल' (नोंक) १० प्रकार के होते थे।

यूनानी राजा सिकन्दर ने जब भारत पर चढ़ाई

की, उस समय धनुष–बाण का काफी प्रचलन था। उस समय के धनुष ५ से ६ फुट तक लम्बे होते थे।

प्राचीन मूर्तिकला व चित्रकला में हमें धनुष–बाण के दर्शन होते हैं। सांची के स्तूप में सिपाहियों का दल बना है जिनके हाथों में तीर–कमान हैं तथा पीठ पर 'तरकश' यानि तूणीर। गुप्तकाल के तो सिक्कों पर भी धनुष–बाण बना होता था। अजंता की चित्रकारी में भी धनुष–बाण का अभाव नहीं है।

पृथ्वीराज चौहान प्रसिद्ध तीरन्दाज थे जो शब्दवेधी निशाने के लिए आज तक प्रसिद्ध हैं। मुस्लिम काल में तैमूर नामक राजा सोने से सजे 'तरकश' इनाम में देता था। इस समय छोटे तीर को नलिका कहा जाता था जो विशेष प्रकार की बन्दूक से चलाया जाता था। आजकल युद्धों में बारूद का उपयोग होता है और तीर कमान की प्रथा समाप्त हो गई है, पर उत्तर प्रदेश की थारू जाति आज भी तीर–विद्या में पारंगत है। राजस्थान में सिरोही के आसपास का क्षेत्र आज भी धनुष–बाणों के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है। नागा लोग तथा अंदमान निकोबार द्वीप समूह के वनवासी लोग आज भी धनुष–बाण रखते हैं।

अत: युगों से चली आ रही धनुष–बाण विद्या आज भी किसी–न–किसी रूप में विद्यमान है। अधिकतर धनुषबाण संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

– दिल्ली

मुस्कान की बोहनी

– श्यामल बिहारी महतो

आँगन का दृश्य बेहद उत्साहित और हर्षित आनंद करने वाला था। जिसे देखकर ही मैं अचंभित खड़ा एक सुखद अनुभूति करने लगा था।

सामने की बालक्रीडा कमाल की थी मनोरंजक भी और कौतूहल से भरा हुआ...।

दीवार से सटकर, एक कुर्सी पर मुस्कान बैठी हुई थी, उसके कानों में डॉक्टरी आला झूठ–मूठ का लगा हुआ था। वह आले (स्टेथोस्कोप) का अगला भाग सामने की स्टूल पर बैठी अपनी प्रिय सहेली ऋतु के सीने पर रख उसकी धड़कनें और साँसों की गति की जाँच कर रही थी। फिर उसने ऋतु से कहा– ''तुम अपना मुँह खोलो ऋतु!'' ऋतु ने मुँह खोल दिया।

''मुँह से बदबू आ रही है, दाँत भी गंदे हो गये हैं, तुम ब्रश नहीं करती हो क्या ऋतु?'' उसने पूछा।

''ब्रश हमारे घर में नहीं है, हम दातुन और दन्तमंजन से दाँत साफ करते हैं।'' ऋतु ने बतायी।

''दातुन ठीक से नहीं हो, तभी दाँत इतने गंदे हैं, बाबू जी से कहो, कोलगेट और ब्रश–जीभी ला देगा।''

''बाबू जी घर में नहीं है, बाहर काम करने गया है।''

''जब आयेगा तब मंगा लेना और दाँत–मुँह ठीक से साफ करना, ठीक है।''

''ठीक है, डॉक्टरनी साहिबा।''

मैं अभी–अभी कार्यालय से घर लौटा था। आँगन में कदम रखने ही वाला था कि तभी यह अद्‌भुत दृश्य देख दीवार से सटकर खड़ा हो गया ताकि उन दोनों की दृष्टि मुझ पर न पड़े और उनके डॉक्टर–रोगी के खेल में कोई व्यवधान उत्पन्न न हो।''

मुस्कान कह रही थी–

''तुम हर दिन नहाती भी नहीं हो क्या ऋतु?, कपड़े भी तुम्हारे कितने गंदे हैं। इस तरह तो तुम बीमार पड़ जाओगी।''

''माँ रोज–रोज नहाने नहीं देती है, कोयला लाने कोलियरी चली जाती है, घर में पानी भी नहीं रहता है, मैं छोटी हूँ, कुएँ से पानी ला नहीं सकती हूँ, कैसे नहाऊँगी–कपड़े भी इसीलिए गंदे है।'' ऋतु ने अपनी मजबूरी बताई थी।

''ठीक है, माँ से पानी लाकर घर में रखने को कहना और तुम स्वयं नहाना और स्वयं कपड़े धोना ठीक है।''

''ठीक है।''

''तोंई यहाँ काहे खड़ा हअ?'' पीछे से पत्नी आकर बोली। बात उन दोनों ने सुन ली।

''अरे बाबा! आ गया बाबा आ गया।'' कह मुस्कान मेरी ओर दौड़ पड़ी। ''बाबा! मेरा बिस्कुट ला दिए?''

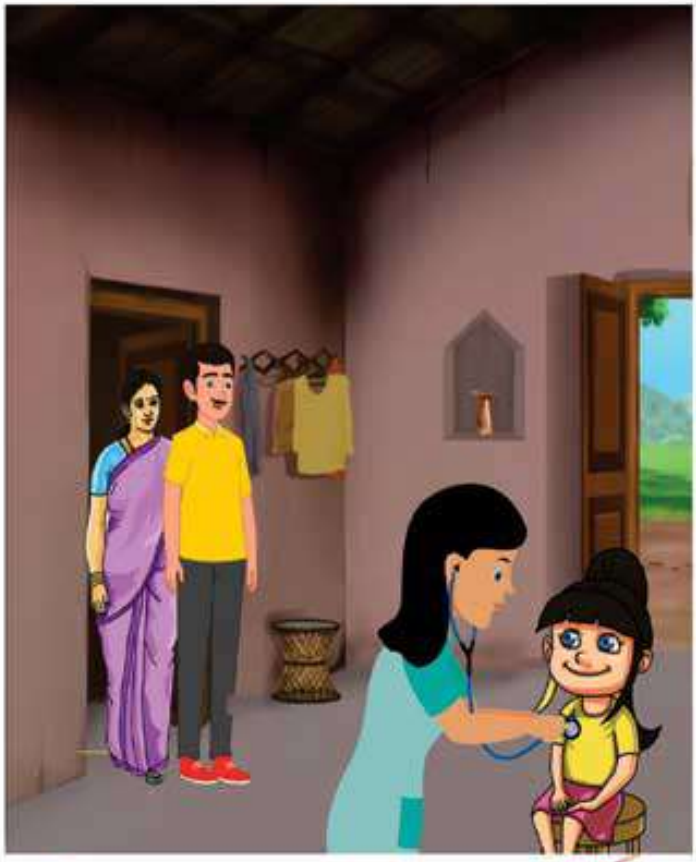

''बिल्कुल ला दिए है बेग में है।'' उसे गोद में उठाते हुए मैंने प्यार से पूछा। ''पहले तुम ये बताओ, अभी जो तुम दोनों खेल रही थी वो कहाँ से सीखा?''

''हम तो ऐसे ही खेलते है बाबा!'' मुस्कान मुस्कुरा उठी।

अकस्मात मुझे चन्द्रगुप्त मौर्य की बाल कहानी याद आ गई थी। वो भी बचपन में अपने बाल सखाओं के साथ इसी तरह राजा–प्रजा का नाटक खेला करते थे, जो बाद में भारत का शक्तिशाली मौर्य सम्राट बन बैठे थे।

तभी मैंने उसकी दादी की ओर देखते हुए मुस्कान से पूछा था– ''मुस्कान! तुम पढ़–लिखकर क्या बनोगी?''

मुस्कान बेग से बिस्कुट निकाल रही थी। मेरी बात ठीक से सुन नहीं पाई। पूछ बैठी– ''क्या कहा बाबा?''

''तुम पढ़–लिखकर क्या बनना चाहोगी?''

''मैं मैं पढ़–लिखकर डॉक्टर बनूँगी बाबा।'' और हँसते हुए वह गोद से उतर गई थी।

''ठीक है, बोहनी दादी के घुटने का उपचार करना।''

''ये बोहनी क्या होता है बाबा?''

''शुरुआत।''

''ठीक है, डॉक्टर बनते ही मैं दादी का घुटना ठीक कर दूँगी बाबा।'' कहते हुए ऋतु के साथ वह बाहर भाग गई।

– बोकारो (झारखंड)

छः अँगुल मुस्कान

एक व्यक्ति बहुत भुलक्कड़ था। कार्यालय जाते समय उसे अपने चश्मे की याद आयी और इसके बारे में उसने अपनी पत्नी से पूछा। पत्नी ने इधर–उधर ढूँढ़ा, लेकिन उसे चश्मा नहीं मिला। थोड़ी देर के बाद अचानक वह व्यक्ति बोला– ''याद आ गया। सुबह समाचार–पत्र पढ़ने के बाद मैंने उसे कुर्ते की जेब में रखा था, अभी निकाल कर लाता हूँ।''

लेकिन जब उसने कुर्ते की जेब में हाथ डाल कर बाहर निकाला, तो उसके हाथ में जूते पॉलिश करने का ब्रश था।

*****

रामू (पुलिस इंस्पेक्टर से) सर मैं इनामी बदमाश खप्पर सिंह के बारे में कुछ सूचना देना चाहता हूँ।

पुलिस इंस्पेक्टर बोलो, क्या सूचना देना चाहते हो?

रामू–सर खप्पर सिंह के फोटो का जो पोस्टर दीवारों पर चिपकाया गया है। आप उस फोटोग्राफर को पकड़ लें तो पता लग जायेगा कि वह फोटो खिंचवाने कहाँ से आया था। स्टूडियो में पता तो लिखवा ही गया होगा।

*****

अध्यापिका– बच्चो यहाँ शांति क्यों नहीं है? तुम लोग कब सुधरोगे?

एक छात्रा–दीदी! वह तो अभी–अभी दूसरे कमरे में गई है। क्या मैं उसे बुलाऊँ?

*****

एयर कंडीशन ठीक कराने के बाद रेशमा ने पूछा– तुम्हारे कितने पैसे हुए?

'ज्यादा नहीं केवल आठ सौ।' मैकेनिक ने कहा।

रेशमा– अरे भाई, मेरे पति इंजीनियर हैं। परन्तु एक घंटे का आठ सौ रुपये तो उन्हें भी नहीं मिलता।

मैकेनिक–इसीलिए तो मैं इंजीनियर की नौकरी छोड़कर मैकेनिक बन गया।

डॉ. राष्ट्रबंधु जैसा कोई नहीं

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

राष्ट्रबन्धु

प्यारे बच्चो,

भविष्य में शायद कोई विश्वास न करे कि बाल साहित्य के क्षेत्र में डॉ. राष्ट्रबंधु जी की तरह भी कोई अद्वितीय लेखक हुआ होगा। वे कवि, कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, लेखक, समीक्षक, शोधकर्ता और संपादक सभी कुछ थे। सच, उनके जैसा कोई नहीं। वे एक सच्चे मनुष्य थे, बाल साहित्य एवं साहित्यकारों के लिए पूरी तरह समर्पित लेखक।

सहारनपुर में २ अक्टूबर १९३३ को देवी प्रसाद तिवारी और भगवती देवी की संतान के रूप में जन्में 'राष्ट्रबंधु' जी का वास्तविक नाम श्रीकृष्णचन्द्र तिवारी था। सागर विश्वविद्यालय सागर (म. प्र.) से उन्होंने १९७० में **हिन्दी बालसाहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन** विषय पर पी–एच. डी. की उपाधि अर्जित की, प्रवक्ता व प्राचार्य बने।

कानपुर से १९७७ में उन्होंने 'बाल साहित्य समीक्षा' मासिक का संपादन प्रारंभ किया। इस पत्रिका ने बाल साहित्यकारों पर केंद्रित दुर्लभ विशेषांक प्रकाशित किए। १९८० में भारतीय बाल कल्याण संस्थान की स्थापना की, जिसने देश–विदेश के सर्वाधिक बाल साहित्य लेखकों और बाल हितैषियों को सम्मानित किया है। उनकी पहली रचना 'बाबा क्यों तम्बाकू खाते' १९५० में 'प्रताप' दैनिक के साप्ताहिक परिशिष्ट में छपी थी। उन्होंने हिंदी में सबसे पहले १९८४ में 'हिन्दी के बाल साहित्यकार' नामक पुस्तक तैयार की। 'देवपुत्र' इन्दौर के तत्वावधान में बाल साहित्य सृजन पीठ से उनके सह संपादन में बृहद् बाल साहित्यकार कोश का प्रकाशन हुआ। वे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत के अतिरिक्त कई भारतीय भाषाओं में धारा प्रवाह बोलने की क्षमता रखते थे।

डॉ. राष्ट्रबंधु की बाल कविताओं की प्रमुख पुस्तकें हैं– बालभूषण, कंथक थैयां घुनूं मनइयां, हँसी के बालगीत, देशप्रेम के गीत, नाचो गाओ, टेसू जी की भारत यात्रा, राजू के गीत, तीस तितलियाँ, अस्सी नब्बे पूरे सौ, टिली लिली, लाक्षागृह, टेसू राजा, गंगा मैया की जय हो, हमें नया आकाश चाहिए, मेरे प्रिय गीत, श्लोकों में अर्चना, मनोरंजक बाल कविताएँ, जादूगर से लगते बादल, झुझिया रानी टेसू राजा। उनका 'जयसियाराम' कैसेट भी खूब लोकप्रिय हुआ था।

इसके अतिरिक्त उन्होंने जादूगर फास्टस (उपन्यास), मकरन्दी, विक्रमादित्य का सिंहासन, एक पखवाड़ा किशोर कहानियों का, प्रयोग की कहानियाँ, ठेले पर किताबें (बाल कहानी संग्रह), जय माँ काली, अब्बा की खाँसी, (बाल नाटक), यह मत सोचो तुम गरीब हो, ये महान कैसे बने, हम साहस के बेटे हैं, फसल जलियाँ वाले बाग की, अंगरक्षक, मदन मोहन मालवीय, धरतीपुत्र लाल बहादुर शास्त्री, स्मरणीय व्यक्तित्व, नाम बताइये, भारतीय प्रतिभाएँ,

विश्व प्रतिभाएँ, भारत की महान बेटियाँ (जीवनी/प्रेरक प्रसंग), चप्पा-चप्पा मध्य प्रदेश, यात्रा कुमायूँ गढ़वाल की (यात्रावृत), स्वतंत्रता संघर्ष के नौ दशक (इतिहास), भारतीय बाल साहित्य की भूमिका (समीक्षा), तपती रेत पर (आत्मकथा) इत्यादि पुस्तकें भी लिखीं।

उन्होंने श्यामलाकान्त वर्मा, उद्भ्रांत, शोभनाथ लाल आदि बाल साहित्य लेखकों पर ग्रंथ भी सम्पादित किए। वीणा के गीत, बांग्लार शिशु गीत, सिन्धी के बाल गीत संकलनों के अतिरिक्त उन्होंने पाठ्य पुस्तक आलोक भारती का संपादन किया। जब वे कविताएँ सुनाते थे तो उनके साथ-साथ बच्चे क्या, बड़े भी झूम उठते थे। **डॉ. राष्ट्रबंधु की आवाज में उनकी कविता 'काले मेघा' सुनने के लिए यह क्यू आर कोड स्केन करें**

अपने जीवन का अधिकांश समय उन्होंने यात्रा में बिताया। किसी भी बाल साहित्य लेखक ने इतनी यात्राएँ नहीं की होंगी। अमृतसर के बाल साहित्य सम्मेलन में भाग लेकर कानपुर लौटते समय ट्रेन में ही ३ मार्च २०१५ को उनका निधन हो गया।

आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ बेजोड़ रचनाएँ-

कहानी

फटी शर्ट

खिचड़ी बालों पर दोनों हाथ रखे हुए रामेश्वरन ने जोरों से चिल्लाना शुरू किया। प्रभा और चन्द्रशेखरन सहम गये। उन्होंने देखा पिताजी के हाथ में कमीज है। पिताजी की त्योरियाँ चढ़ी हुई हैं। होंठ फड़क रहे हैं। न जाने कौन-सी आफत आने वाली है।

इडली बनाने की चावल पिट्ठी छोड़कर विद्या चली आई, बोली- ''क्या हो गया है?''

''देखती हो यह कमीज।''

विद्या ने देखा और कहा- ''धोबी ने जला दी होगी।''

''धोबी ने जलाई! मैंने धुले हुए कपड़ों की घड़ी बनाकर रखी थी। तुम भी मुझे बेवकूफ बनाने लगी हो। यह तुम्हारे बच्चों की कारस्तानी है। बात टालने का प्रयत्न बेकार में क्यों कर रही हो।''

''मैं तो नहीं समझती कि बच्चे ऐसी शैतानी करेंगे?''

''तुम हमेशा बच्चों का पक्ष लेकर मुझसे ही लड़ने लगती हो। और तुम्हारे ये लाड़ले धरती फाड़ डालेंगे।''

विद्या ने आवेश में कहा- ''तुम्हीं भूल जाते हो। उस दिन बाजार से जाने क्या-क्या खरीद कर लाये और घर में आकर कहने लगे, कि मेरे पचास पैसे किसी ने निकाल लिए। कोहराम मचा दिया। लेकिन जब मैंने तुमसे पूछा कि हिसाब तो बताओ, तब कहीं तुम्हारी ही भूल समझ में आई।''

''यानी तुम मेरी एक भूल को हर बार उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने लगी हो। मैं अच्छी तरह जानता हूँ, मेरी यह कमीज धोबी के यहाँ से बिना जली हुई आई थी।''

''तो फिर पूछो इनसे।''

रामेश्वरन ने प्रभा और चन्द्रशेखरन को बुलाकर पूछा- ''सच-सच बताओ, तुममें से किसने मेरी शर्ट जलाई है?''

''पढ़ने वाली किताब में मुँह छिपाने वाली प्रभा

ने बड़ी सावधानी से धीमी आवाज में बुदबुदाते हुए कहा– ''पिता जी! मैंने नहीं जलाई।''

पिताजी ने चन्द्रशेखरन से पूछा– ''क्यों चन्दू! यह क्या तुम्हारी हरकत है? बोलो अभी बता दो, क्षमा कर दूँगा वर्ना झूठ बोलने का दण्ड भी मिलेगा।''

चन्दू ने जोर से कहा– ''मैंने नहीं जलाई, प्रभा ने जलाई होगी।''

''तुम दोनों ने से किसकी शैतानी है बोलो, दोनों के 'न' कहने पर काम कैसे चलेगा। कमीज जलाने के लिए घर के बाहर का कोई व्यक्ति नहीं आ सकता।''

चन्दू ने कहा– ''धोबी जला सकता है।''

रामेश्वरन के क्रोध का तापमान अधिक हो गया। शरीर काँपने लगा। बेहोश गुस्सा दूसरों के भी होश गुम करने लगा। रामेश्वरन ने बेंत लेकर मारना शुरू किया। प्रभा रोने लगी, चीखने लगी और चन्दू को इतनी मार पड़ी कि पीठ और हाथों पर काले धब्बे पड़ गये। लेकिन यह पता न चल सकता कि कमीज किसने जलाई। आखिर में विद्या को हस्तक्षेप करना पड़ा– ''रहने दो।'' ''क्यों रहने दूँ, दोनों झूठ बोलते हैं।''

''अच्छा तो मार डालो। मैं नहीं बोलूँगी।'' विद्या आँसू बहाने लगी। रामेश्वरन कुर्सी पर बैठ गये। उन्हें बहुत क्रोध था। गांधी की फोटो उन्हें देख रही थी।

रामेश्वरन सोच रहे थे– ''गाँधी भी! कभी बालक थे। सच बोलता थे। आजकल के बच्चे कितने अड़ियल हैं।''

विद्या सोच रही थी– 'इनकी यही आदत हैं।' चन्दू सोच रहा था– 'पिताजी में इंसानियत नहीं है।' लेकिन यह पता नहीं चल सका कि कमीज किसने जला डाली। दो दिन सरक गये। रामेश्वरन न तो अपनी पत्नी से बोला और न बच्चों के स्नेह से पिघला। माँ पड़ोस में गयी थी।

चन्दू ने प्रभा से कहा– ''एक डोसा ले आ।''

''माँ को आने दो तब खाना।''

''तू ले आ, माँ कुछ न कहेगी। माँ कितनी सीधी है, टेढ़े तो पिता जी हैं। बात बात में उनकी भौहें तन जाती है, शिष्टाचार और विनय नहीं जानते। उन्हें मोह–ममता नहीं देखा, तीन दिन हो गये, माँ से नहीं बोले, हमसे नहीं बोले। माँ सीधी हैं, पिता जी टेढ़े हैं।''

''आग तूने लगाई है। उनकी कमीज जलाकर रख दी और अब बनता है।''

''मैंने नहीं जलाई।''

''क्यों झूठ तो भी नहीं बोलते हो? मुझे बता दो, नहीं कहूँगी, माँ से भी नहीं, किसी से नहीं।''

''नहीं जलाई।''

संध्या हुई। माँ ने कहा– ''चन्दू कल शिवरात्रि है। मुझे व्रत रखना है। रामैया के यहाँ से दूध तो ले आ जरा।''

''मुझे गृहकार्य करना है।''

''चला जा। रात में लगकर पूरा कर लेना। बिना दूध के तो कुछ नहीं बनाऊँगी। कल फलाहार में क्या लूँगी? सारा दिन क्या भूखी रहूँगी?''

''रात में इतनी दूर नहीं जाता। सुबह चला जाऊँगा।''

''लेकिन सुबह के दूध से दही नहीं जमाया जा सकेगा।''

चन्दू नहीं उठा। पढ़ाई में नाटक का रोल अदा करने लगा। उसे लगा, सारी रेखाएँ सिमट कर भूखी माता का स्वरूप चित्रित कर रही हैं। उसे वह सह नहीं सका। उसने दूध का बर्तन लिया और माँ से कहा– ''पैसे दो।''

माँ ने पैसे दिये और चन्दू चला गया। इतने में रामेश्वरन ने कब प्रवेश किया, विद्या को पता नहीं चला। उन्होंने कपड़े उतारे व लुंगी पहन ली। चारपाई पर बैठकर समाचार–पत्र पढ़ना प्रारंभ किया। विद्या ने

कहा– ''आप बहुत अधिक नाराज हैं।''

''नहीं तो।''

''तो बोलते क्यों नहीं ?''

''किससे बोलूँ। बोलने लायक यहाँ कोई नहीं है।''

विद्या ने समझौते में कहा– ''चन्दू कमीज नहीं जला सकता। कितना अच्छा लड़का है, देखिये मेरे कहने पर दूध लेने एक किलोमीटर दूर कितनी रात में गया है।''

''हाँ! बहुत अच्छा लड़का है। किताबें देखें उसकी बेतरतीब रखी हैं, घर की ये दीवारें देखो, तुम्हारे बेटे का नाम जगह–जगह लिखा है। स्वागतम् लिखा है। विद्यालय से प्रतिदिन शिकायतें आती हैं, कभी न पढ़ने की और अधिकांश मार–पीट करने की।''

''आप कभी तो लड़के की अच्छाई सराहा कीजिये उसकी बुराइयाँ हमेशा नुक्ताचीनी करके कुरेदते रहते हैं। मुझे विश्वास है, उसने यह शैतानी नहीं की होगी।''

''तो प्रभा ने की होगी।''

''वह कर नहीं सकती।''

बातें चल रही थीं। चन्दू दूध लेकर आ गया। पिछले दरवाजे से रसोईघर में जाकर उसने दूध ढक कर रख दिया। पिता जी के सामने जाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। इसलिए वहाँ से छुपकर वह बातें सुनने लगा। पिता जी कह रहे थे– ''तुम जानती हो, चौथा सप्ताह है कड़की है नयी कमीज सिला नहीं सकता। चन्दू ने कई बार अपनी कमीज बनवाने की बात कही, किन्तु मेरे पास रुपये नहीं हैं। अपनी मजबूरियाँ कैसे कहूँ? मुझे कल अपने पिता जी को पचास रुपयों का मनीऑर्डर भेजना है। क्या करूँ, कहाँ से लाऊँ? पिता जी को देखू या बच्चों को?''

उनके कहने की विवशता ने चन्दू को हिला दिया। बात–चीत में माँ ने चन्दू की तरफ से विश्वास

दिलाया कि यह शैतानी उसकी नहीं हो सकती। उसके साथ आप हमदर्दी का व्यवहार किया कीजिये।

''अच्छा।''

लौटकर चन्दू की माँ जब रसोई में आई, तो उसने चन्दू को बैठे देखा। माँ ने चन्दू से कहा– ''बेटा! चलो डोसे खा लो मैंने बनाये हैं।''

सभी ने मसालेदार डोसे खाये। रात गहरी हो गयी लोग सो गये थे। लेकिन चन्दू करवटें बदलता रहा। उसे भी अपना कर्त्तव्य पिता के प्रति पूरा करना था। आशाओं का अरुणोदय हुआ। विद्यालय जाने की तैयारी हुई। चन्दू विद्यालय चला गया। शाला की पोशाक गन्दी थी। इसलिए दूसरी पोशाक में जाने पर उसे अर्थ दण्ड किया गया। वह तमतमा उठा।

चन्द्रशेखरन शिक्षक कक्ष में गया। वहाँ उसने नेता जी का फोटो देखा, कर्त्तव्य प्रेरणा से मन भर गया। उसने अपने कक्षा शिक्षक से निवेदन किया, ''आप जो भी दंड देना चाहें, दीजिए। कड़े से कड़े दंड दीजिए। किन्तु अर्थदंड मत दीजिए। मेरे पिता जी पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा। वे दे नहीं पाएँगें।''

उदास अय्यर महोदय ने सहृदयता दिखाई और अर्थदंड नहीं किया। चन्दू ने घर आकर अपना गणवेश धोया और स्वयं इस्तरी की। धोबी को कपड़े नहीं भेजे। प्रभा और उसकी माँ के लिए यह अजीब और नयी बात थी।

चन्द्रशेखरन ने अपने मन की आग बुझाने का

निश्चय किया, पिता जी की शर्ट लेकर वह अपने साथी विश्वनाथन के पास गया। विश्वनाथन दुकान में बटन टाँक रहा था।

विश्वनाथन के पिता जी कपड़े सिलते थे। चन्द्रशेखरन ने अपने मित्र से कहा– ''भाई! मेरे पिता जी की यह कमीज रफू कर दो।''

''यह कैसे जल गयी?'' विश्वनाथन ने पूछा।

''मैं कैसे कहूँ, जो पिता जी से नहीं कह सका, उसे तुमसे बिना कहे रहा नहीं जाता।''

''तो फिर बताओ?''

''केवल तुम्हीं को बता रहा हूँ, यह जली नहीं, मैंने जलाई है।''

''क्यों?''

''पिता जी से बदला लेने के लिए। वह मेरे लिए नयी कमीज नहीं सिलवाते थे।''

''तो अब क्यों सिलाने लाए हो?''

''मेरे पिता जी गरीबी में अपने पिता जी का ध्यान रखते हैं। तो क्या मैं इतना भी नहीं कर सकता कि उनकी कमीज रफू करा दूँ? तुम भी तो अपने पिता जी के काम में सहायता करते हो।''

''अच्छा ठीक है, मैं अच्छी से रफू कर दूँगा।''

●

नयी डायरी

नयी डायरी मुझे मिली है,
इसमें अपना नाम लिखूँगा
होमवर्क का काम लिखूँगा।
किसने मारा, किसने डाँटा,
बदनामों के नाम लिखूँगा।
इतिहासों में कली खिली है।
नयी डायरी मुझे मिली है।
कारटून हैं मुझे बनाने,
हस्ताक्षर करने मनमाने।
आप अगर रुपये देंगे तो
बन जायेंगे जाने–माने।
भेंट दीजिए, कलम हिली है।
नयी डायरी मुझे मिली है।
तेन्दुलकर के छक्के पक्के,
कैच कुंबले के कब कच्चे।
किया सड़क पर पूरा कब्जा,
'बचके चलो', बोलते बच्चे।
लाई लप्पा टिली लिली है।
नयी डायरी मुझे मिली है।।

कविता–वविता

खाना–वाना, रोटी–ओटी, गाड़ी–वाड़ी ला,
आँधी–गाँधी सात समुन्दर, लाड़ी–खाड़ी जा।
डोसा–ओसा, माल समोसा ऊटी–सूटी छा,
काशी–वासी, मथुरा–वथुरा पेड़े–वेड़े खा,
पानी–वानी, नाना–नानी, आनाकानी ना।
हा–हा, ही–ही, हे–हे, हो–हो, हाँ–हाँ, हाँ–हाँ गा।

लोरी

कंतक थैयाँ घुनूँ मनइयाँ।
चंदा मामा पइयाँ पइयाँ।
यह चन्दा चरवाहा है, नीले–नीले खेत में।
बिलकुल संतमेंत में, रत्नों भरे रेत में।
किधर भागता लइयाँ पइयाँ।
कंतक थैयाँ घुनूँ मनइयाँ।
अंधकार है घेरता, टेढ़ी आँखों हेरता।
चाँद नहीं मुँह फेरता, रॉकेट को है टेरता।
मुन्ने को लूँगा मैं कइयाँ।
कंतक थैयाँ घुनूँ मनइयाँ।
मिट्टी के महलों के राजा, ताली तेरी बढ़िया बाजा।
छोटा–छोटा छोकरा, सिर पर रक्खे टोकरा।
राम बनाये डोकरा,
बने डोकरा करूँ बलइयाँ।
कंतक थैया घुनूँ मनइयाँ।

– शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

गौशाला में आग

– रजनीकांत शुक्ल

यह वर्ष १९९९ की घटना है। जब उत्तराखण्ड का चम्पावत जिला उत्तरप्रदेश राज्य में ही था। इसी जिले के चोरापिता गाँव में भगवानसिंह नाम के किसान रहते थे।

वह अप्रैल महीने की बारह तारीख थी। लगभग शाम के लगभग पाँच बजे का समय हो रहा था। घर के बड़े लोग उस समय खेतों की ओर काम से गए हुए थे। भगवानसिंह के मुख्य घर के बगल में ही उनकी अपनी गौशाला थी। जो उस समय खाली थी क्योंकि उनके घर के मवेशी भी इस समय खेतों की ओर चरने के लिए गए हुए थे।

घर के सभी नन्हें–मुन्ने बच्चे दोपहर को इस समय घर पर ही खेल में लगे हुए थे। जिनमें छः वर्ष की विनीता और उसके भाई ललित सिंह, मनोज सिंह किशोर सिंह व बहन उमा और रीता थे। उन सबको इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि कुछ देर के बाद उन पर क्या विपत्ति आने वाली थी।

वे सब तो दीन दुनिया से बेपरवाह निश्चिन्त होकर आपस से खेल खेलने में मगन थे। सभी बच्चों की आयु दस वर्ष से कम थी। थोड़ी देर बाद खेतों से घर के बड़े लोगों के वापस आने का समय होने वाला था। उस समय न केवल उनके घर के बड़े लोग बल्कि पास पड़ोस के घरों में भी अधिकतर लोग किसी न किसी काम से घरों के बाहर ही थे।

ऐसे में उनकी गौशाला में रखे फूस में न जाने कैसे आग लग गई। आग और फूस को साथ नहीं रहना चाहिए नहीं तो वह हितकर नहीं है। वह बहुत विषम स्थिति उत्पन्न कर देता है। ऐसी कहावत भी कही जाती है। यही हुआ भी धीरे–धीरे बढ़ती वह आग फूस का सहारा पाकर कैसे एक छोटी सी चिंगारी से ज्वाला बन गई इसका पता किसी को भी न लग सका। उन्हें तो तब पता चला कि जब गौशाला के ऊपर बँधे छप्पर में लगी उस आग से उठने वाले लपटों ने भगवान सिंह के समूचे घर को धीरे–धीरे अपने चपेट में लेना शुरू कर दिया।

वह अभी उनमें से एक दो बच्चों को ही सुरक्षित बाहर निकाल कर ला पाई थी कि उसने देखा कि उसकी गौशाला तो पूरी तरह राख हो चुकी थी ओर अब आग की लपटें उसके घर को पूरी तरह अपने लपेटे में लेती जा रही हैं। अन्दर की ओर जाने वाला दरवाजा भी अब आग की लपटों में घिर चुका है।

चूँकि अभी पूरे बच्चे भी बाहर नहीं आ पाए थे और कोई बड़ा व्यक्ति भी आसपास में नहीं था। न ही किसी बाहरी सहायता को माँगने जाने का समय था। विनीता ने सोचा कि जो कुछ भी करना है उसे बिलकुल अभी–अभी और अपनी जान पर खेलकर

करना है।

विनीता केवल छः वर्ष की थी और आग की लपटें अन्दर जाने वाले दरवाजे को अपने चंगुल में जकड़ चुकीं थीं। अन्दर जाना उस समय खतरे से खाली नहीं था। किन्तु अन्दर रह गए भाई–बहन को तो निकालकर लाना ही होगा। विनीता ने एक पल सोचा और फिर उसने बिना लपटों की परवाह किए जलते दरवाजे से अन्दर की ओर छलांग लगा दी।

अपनी हिम्मत से उसने एक पड़ाव तो पार कर दिया था मगर भाई बहनों को सुरक्षित बाहर लेकर आने का दूसरा पड़ाव उसे अभी पार करना था। अन्दर पहुँचकर विनीता ने जल्दी–जल्दी अपने भाई–बहन को अपने साथ में लिया और एक बार फिर दरवाजे को पार करने के लिए बाहरी भाग में आ गई।

छोटे भाई–बहन तो आग की भयंकरता को देखकर बेहद डरे हुए थे किन्तु उन्हें हिम्मत बँधाते हुए विनीता ने तेजी से आगे बढ़ते हुए आग की लपटों के बीच से निकलकर बाहर की ओर छलांग लगा दी। इस तरह एक–एक करके उसने उन सभी छः बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया था। अब उसे अपने जलते हुए घर की चिन्ता थी।

वह अपने भाइयों और बहन के साथ चीखती चिल्लाती दौड़ती हुई खेत पर पहुँची। उसे इस प्रकार बदहवास नन्हें बच्चों के साथ भागकर आता देखकर घर के बड़े लोग जो वहाँ थे बहुत घबरा गए। जब उन्हें बच्चों से सारी घटना का पता चला तो वे सब दौड़े–दौड़े आए और आग को बुझाने का प्रयत्न करने लगे।

उनको खेतों से तेजी से घर की ओर भागता देखकर गाँव के और दूसरे लोग भी उनके साथ–साथ दौड़ पड़े। संयोग से उन्होंने आग को भगवानसिंह के घर से आगे से अगले मकानों तक फैलने से रोक लिया और सभी ने मिलकर उनके घर में लगी उस आग को बुझा दिया। विनीता के साहसिक कार्य से न केवल उसके घर के छः नन्हें–मुन्ने बच्चों की जान बच गई बल्कि गाँव के दूसरे घरों तक जाने से भी रुक गई।

इस तरह विनीता के साहस से आग में फँसे बच्चे और जान धन की संभावित हानि बच सकी। विनीता को उसकी इस बहादुरी के लिए वर्ष २००० के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। उसे अगले वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश के अन्य भागों में चुने गए ऐसे ही बहादुर बच्चों के साथ राजधानी दिल्ली में बुलाया गया। जहाँ पर विनीता को देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रधानमंत्री निवास में आमंत्रित किया और **राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार** देकर सम्मानित किया।

नन्हें दोस्तो,

कितने छोटे हाथ हमारे, कितने नन्हें पाँव।
रुकें न तन मन जब तक अपना आ ना जाए ठाँव।।
जब भी वक्त पड़ा कोई, हर बार गए अजमाए।
संघर्षों में चमक बिखेरी, जब भी गए जलाए।।

– दिल्ली

सेकेण्ड लेफ्टीनेंट सायरस एडी पीठावाला

पर्वतीय प्रांत मणिपुर का टेकचाम क्षेत्र ६ जुलाई १९८१ की वह रात १७ जम्मू व कश्मीर राइफल्स के जवान सेकण्ड लेफ्टीनेंट एडी पीठावाला के नेतृत्व में जंगली जहरीले कीड़ों से भरे दलदली रास्ते पर सशस्त्र उग्रवादियों का पीछा करते हुए लगभग ७ किलोमीटर चल चुके थे। टेकचाम पहाड़ी मात्र २०० मीटर दूर थी कि छुपे हुए उग्रवादियों ने अँधाधुँध फायरिंग आरंभ कर दी।

पीठावाला के दल ने जवाबी कार्यवाही की तभी उनकी दृष्टि एक छुपते हुए भाग रहे उग्रवादी पर पड़ी। साहस के पुतले सेकण्ड लेफ्टीनेंट ने उसका पीछा करते हुए उसे जीवित पकड़ना चाहा। क्योंकि वह पकड़ा जाने पर गिरोह के कई रहस्य बता सकता था। वह हाथ आने ही वाला था कि पीठावाला का कंधा एक दूसरे उग्रवादी की गोली से घायल हो गया।

गोली का घाव कांधे पर लिए भी वे रुके नहीं आखिर उस भागते उग्रवादी को पकड़ ही लिया। वह प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का चीफ एन. विश्वेश्वर सिंह निकला। इसके बाद भी भोर की लालिमा फैल चुकी तब तक अभियान चलाया और उन उग्रवादियों को ढेर कर, ढेर सा गोला बारूद जब्त किया।

१३ जनवरी १९५७ को बैंगलुरू कर्नाटक के एक पारसी परिवार में जन्में श्री एडी पीठावाला के इस सपूत ने एयरफोर्स स्कूल दिल्ली में प्रारंभिक पढ़ाई की फिर दिल्ली विश्वविद्यालय से एम. कॉम. कर १९७८ में ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी में भर्ती हुए। घुड़सवारी और एथलेटिक्स में कुशलता प्राप्त की, पुरस्कार पाए। १ सितंबर १९७९ को जम्मू व कश्मीर

राइफल्स में कमीशन हुए। अरुणाचल और लद्दाख में सेवाएँ दीं। मणिपुर और बारामूला में सैन्य अभियान के सहभागी बने। कंबोडिया में संयुक्त राष्ट्र संघ में भी रहे।

उपर्युक्त अत्यन्त साहसिक सफलता के लिए उन्हें अशोकचक्र से सम्मानित किया गया।

-

कब से मानते व जानते हैं हम उन्हें

चन्दा-सूरज भारतीय लोक-कथाओं गीतों व लोक कलाओं में सदियों से हमसे आत्मीय नाता बनाए हुए हैं।

भारतीय कालगणना के तो ये दोनों आधारभूत आकाशीय पिण्ड हैं। यह सिद्ध करता है कि हमारे पूर्वज इन्हें कब से, कितना जानते व मानते थे। आज भारतीय वैज्ञानिक यही सम्बन्ध अपने प्रकार से सिद्ध कर रहे हैं।

शुभ्रा

– डॉ. पूजा हेमकुमार अलापुरिया

राज अपने परिवार के साथ पिछले सप्ताह ही मुंबई आया था। राज, राज की पत्नी अरुणा और दोनों बच्चों ने मिलकर लगभग सप्ताह भर में सारा सामान जमा लिया था। बच्चों का विद्यालय में प्रवेश भी हो गया।

राज के मन में यही चल रहा था कि माँ– पिता जी को कह तो दिया था कि एक बार मुंबई में सब जम जाए तो अगले महीने आपको लेने आता हूँ। लेकिन मुंबई के टू. बी. एच. के. मकान को देख वह बड़ा असमंजस में था। घर कहने को तो टू. बी. एच. के. है लेकिन शुरू होने से पहले से समाप्त हो जाता है। खैर...।

आज रविवार था। शुभ्रा, स्वराज और राज की छुट्टी थी तो सोचा क्यों न चौपाटी ही हो आयें। चौपाटी की बात सुन बच्चे और पत्नी अरुणा तीनों प्रसन्न थे।

वे चारों चौपाटी पहुँचे। अथाह पानी और लोगों का जमावड़ा देख अचंभित हो गए। काफी देर तक समुद्र के पानी में रहने के बाद दोनों बच्चे रेत का घर बनाने लगे। राज और अरुणा वहीं पास में बैठे उन दोनों को घर बनाता देख प्रसन्न हो रहे थे।

दोनों का घर बन जाने पर शुभ्रा ने पिता जी से और स्वराज ने अरुणा से कहा– ''देखो हमारा घर बन गया। कितना सुंदर है ना।'' अरुणा और राज दोनों ने एक साथ कहा– ''वाकई घर बहुत सुंदर है।''

''पिता जी! देखो मेरा घर कितना बड़ा है इसमें हम चारों और दादा– दादी जी भी आ जाएँगे। लेकिन शुभ्रा का घर तो बहुत छोटा है।''

तभी शुभ्रा बोली, ''पिता जी! आप ही तो कहते हो कि घर छोटा या बड़ा होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि घर के सभी लोग एकता एवं सूझ–बूझ से रहे तो छोटे घर में भी सभी बड़े प्यार से रह सकते हैं। लेकिन जहाँ आपसी स्नेह और अपनत्व न हो तो महल भी छोटे पड़ जाते हैं।''

शुभ्रा की बात सुन राज की आँखें गीली हो आई और शुभ्रा को गले लगा लिया।

– नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

घर का वैद्य

सर्दी और जुकाम ऐसे ठीक करें

– उषा भण्डारी

सुबह सभी बच्चे कापियाँ खोलकर बैठे थे। बच्चों ने तय कर लिया था कि जो उपचार के उपाय दादा जी शाम को बताते हैं उन सबको सुबह कॉपी में लिखना चाहिए। इस प्रकार उपाय याद हो जाते थे। सायंकाल हुई, सब लोग प्रतिदिन की तरह दादा जी को घेर कर बैठ गये। राजू ने कहा– ''दादा जी! आप सर्दी–जुकाम का उपचार बताइये।

दादा जी ने कहा– ''ठीक है। सुनो! एक चुटकी सोंठ का चूरन, एक चुटकी सेंधा नमक, दस पत्तियाँ तुलसी की और दो काली मिर्च लें। उनको दो गिलास पानी में डालकर उबालें। जब पानी उबलते–उबलते आधा रह जाए तो उसे थोड़ा ठंडा हो जाने दें। कुनकुना रहने पर पीकर सो जाएँ।''

दादा जी ने दूसरा उपाय बताया– ''एक गिलास पानी में दस ग्राम अजवाइन डालकर उबालें। जब पानी आधे से भी आधा रह जाएँ, तो इसे ठंडा होने पर छानकर पी जाएँ।''

दादा जी ने तीसरा उपाय बतलाया– ''दो ग्राम पिसी हुई सौंठ या हल्दी की फंकी लें। ऊपर से गरम दूध पीने से जुकाम दूर हो जाता है।''

दीपक ने पूछा– ''दादा जी! तुलसी की चाय पीने से भी सर्दी–जुकाम ठीक हो जाता है न?''

दादा जी ने कहा– ''हाँ तुलसी, अदरक और काली मिर्च का चूरन डालकर चाय बनाना चाहिए। उस चाय को पीने से सर्दी–चुकाम में लाभ होता है। इसी प्रकार तुलसी के पत्तों को कूटकर रस निकाल लें। बच्चों को दो–दो बूँद रस दिन में तीन बार देना चाहिए।''

– इन्दौर (म. प्र.)

बाल काव्य प्रतियोगिता सम्पन्न

इन्दौर। १४ सितम्बर हिन्दी दिवस पर श्री माधव विद्यापीठ में अंतर विद्यालयीन बाल काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। १३ विद्यालयों के २६ विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लेकर वीर, ओज, भक्ति और हास्य रंग की कविताओं का पाठ कर खूब तालिया बटोरी।

मुख्य अतिथि राष्ट्रकवि श्री सत्यनारायण सत्तन थे। अध्यक्षता विचार प्रवाह साहित्य मंच के अध्यक्ष श्री मुकेश तिवारी ने की। विशेष अतिथि वरिष्ठ पत्रकार श्री ईश्वर शर्मा थे। अतिथियों का स्वागत विद्यालय समिति की ओर से डॉ जी. डी. अग्रवाल, श्री रमेश गुप्ता, प्राचार्य डॉ. निशा भाटिया ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, देवपुत्र के कार्यकारी संपादक श्री गोपाल माहेश्वरी, श्री सुनील कुमार अग्रवाल, वरिष्ठ गीतकार श्री अनिल ओझा सहित अनेक शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

श्री भावसार को पितृशोक

'देवपुत्र' के संचालक न्यास के प्रबंध न्यासी सीए राकेश भावसार जी के पूज्य पिता श्री योगेन्द्र जी भावसार का देवलोक गमन दिनांक १४/०९/२०२३ को हो गया। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान कार्यकर्ता, प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, समर्पित समाज सेवी एवं देवपुत्र के अत्यन्त हितैषी व्यक्ति थे।

देवपुत्र परिवार की ओर से प्रधान सम्पादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, न्यास के अध्यक्ष डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या एवं गोपाल माहेश्वरी ने सादर श्रद्धांजलि अर्पित की।

नमस्कार! जुलाई का देवपुत्र मिला। 'बात बन गई', 'लाल जूता' कहानी बहुत पसंद आई। डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल जी द्वारा लिखित सत्य मार्ग 'नाटक' अच्छी लगी। राजेश गुजर जी द्वारा लिखित 'व्यंग्य चित्र' ने खूब हँसाया। ऐसा अनोखा अंक प्रदान करने के लिए देवपुत्र की टीम को धन्यवाद।

– हंशु डड़सेना, लोरमी (छ. ग.)

ब्रेन मोड

– हरदेव चौहान

मानी की नानी रसोई में दुपहर का भोजन बना रही थी। सर्दियों की दुपहर थी। दिल्ली से सप्ताहांत बिताने के लिए आए मामा घर के बाहर अपने पिता जी के साथ यार्ड में बैठे आलू, पनीर वाले पराँठे खा रहे थे। भोजन करते-करते मामू को नैपकिन की आवश्यकता पड़ गई। अंदर हाल में खाने की मेज पर बैठे होते तो नैपकिन आसानी से मिल जाता।

मामा ने क्या किया, साथ बैठी मानी को कुर्सी पर पड़ी अपनी जैकेट में से रूमाल निकाल कर देने को बोल दिया। इसी बीच, सामने बैठे नाना जी ने भी बड़ी सहजता से मानी को खाली कटोरी दिखाते हुए रसोई में से दही लाने का संकेत किया ही था कि अंदर से नानी ने भी उसे गर्म, गर्म पराँठे ले जाने की आवाज लगा दी...

मानी ने क्या किया, नाना जी के दही-भल्ले और नानी की पराँठे ले जाने वाली आवाज को अनसुना कर मामा के रुमाल वाले आकस्मिक काम को प्राथमिकता देना आवश्यक समझा। लंबे समय के बाद, वह दिल्ली से यहाँ आया था... रुमाल खोजने के लिए वह जैकेट की बाईं ओर वाली ऊपरी जेब टटोलने लगी... फिर दाईं ओर से अंदर वाली जेबों में से रुमाल खोजने लगी...

उधर मामा बहुत ध्यान से सभी देख रहे थे। रुमाल को खोजने की उलझन में पड़ी देख उन्होंने मानी से पूछा, ''रुमाल खोजना छोड़ दो और यह बताओ कि इस समय अब तुम अपने आस-पास से क्या, कुछ सुन रही हो?''

मानी ने कुछ क्षणों के लिए चारों ओर देखा। आसपास की आवाजों को बड़े गौर से सुना, और फिर वह कहने लगी, ''दाहिने हाथ से चाट-पापड़ी बेचने वाला भाई अपने तवे के ऊपर सिप्पी खटखटा रहा है... सामने पार्क में से एक पक्षी की आवाज आ रही है... और हाँ! आकाश से गुजर रहे एक हवाई जहाज की आवाज भी सुनाई दे रही है।''

''शाबाश! यदि आप एक बार में तीन आवाजें सुन सकते हैं, तो आपने अंदर से नानी की पराँठे ले जाने वाली आवाज क्यों नहीं सुनी, जो कुछ क्षण पहले आई थी? और हाँ! सामने नाना जी भी आपके पास ही बैठे हैं... उन्होंने आपको अंदर से दही लाने के लिए कहा था, लेकिन आपने वह बात भी नहीं सुनी जबकि वह आपको अपनी खाली कटोरी भी पकड़ा रहे थे।'' मामा बोले।

''मामा जी! हमारे शिक्षक तो हमें समझाते हैं कि एक समय में केवल एक ही काम किया जा सकता है और मैं एक ही समय में तीन-तीन काम कैसे कर सकती हूँ? और हाँ! चाहे आप बड़े हैं, बहुत सयाने हैं, अधिक पढ़े-लिखे भी हैं लेकिन हमारे विद्यालय वाले शिक्षकों के अनुसार आप भी एक बार में एक से अधिक काम अच्छे से नहीं कर सकते।'' मानी बोली।

मानी की बात सुन कुछ देर के लिए चुप रहे मामा और फिर लंबे समय से रुमाल की खोज में लगी मानी को कहने लगे, ''यदि हम एकाग्रचित्त रहें तो सभी काम बड़ी शीघ्रता से निपटाए जा सकते हैं और हाँ! जीवन में ध्यान लगा के काम करने वाले लोग ही सफल होते हैं।''

''मामा जी! तो क्या मैं आपका रुमाल नहीं ढूँढ़ रही?'' ''मानी जी! जीवन में आपको एक रुमाल ही नहीं खोजना होता साथ ही अन्य कई महत्वपूर्ण काम भी करने होते हैं। अभी आपको मेरे लिए पराँठे और नाना जी के लिए दही भी लाना है।'' ''मामा जी! तो फिर आप ही बताइए कि इस स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए?''

''देखो! वर्तमान में, यहाँ आपके नाना जी हम सबसे बड़े हैं। आपको सी काम छोड़कर उनके लिए दही लाना चाहिए था, नानी माँ के अनुरोध पर आपको रसोई में से पराँठे भी यहाँ लाने चाहिए थे। आपकी नानी भी सोचती होंगी कि आपने उन्हें सुन कर भी अनसुना करना प्रारंभ कर दिया है।'' ''मामा जी! देखते नहीं अभी तो मैं आपके लिए रुमाल की खोज कर रही हूँ। और आप कह रहे हैं कि मैं सुनकर भी अनसुना कर रही हूँ।''

''मानी जी! बिलकुल अब आप सुनकर भी अनसुना ही कर रही हो। यदि आपका ध्यान काम में ही होता, तो अब तक सारे काम बहुत अच्छे तरीके से हो गए होते।'' ''मामा जी! आप क्या कहना चाहते हैं? कृपया! सारी बात मुझे सरल तरीके से बताओ।'' मामा जी की बात काटकर उलझी-सी मानी ने पूछा।

''मानी! ध्यान से सुनिए यदि आपने ऐसी ही जैकेट पहनी हो और आपको भी रुमाल की आवश्यकता पड़ जाए तो उस स्थिति में आपको अपनी जैकेट की कौन-सी जेब में से रुमाल मिलेगा?'' ''सीधे हाथ और बाहर वाली लोअर पॉकेट में से'' मानी ने तुरंत कहा, और अगले ही पल उसने मामा की जैकेट की बाहर की नीचे वाली पॉकेट में से रुमाल निकाला और मामा को सौंप दिया वह पॉकेट, जो अभी तक उसने देखी ही नहीं थी।

''मानी जी! अब आपको अपने ही कार्य-व्यवहार का अच्छी तरह से अनुभव हो गया होगा?''

''मामा जी! मुझे, अब लगता है कि उस समय मैंने अपने विचारों को नियंत्रित नहीं किया होगा सच! रुमाल को खोजते समय मुझे अपने विद्यालय से मिला हुआ घर वाला अधूरा काम डिस्टर्ब करने लगा था और नीति की नई साइकिल मैं उसके बारे में भी साथ-साथ ही सोच रही थी। सावधानी से यदि मैंने केवल रुमाल को ही खोजने के बारे में सोचा होता तो तुरंत ही उसे आपकी बाहरी जेब में से ढूँढ़ कर आपको दे देती। और हाँ! उसी समय, नाना जी के लिए दही-भल्ले और साथ ही आपके लिए पराँठे भी अंदर से ला सकती थी। क्षमा करें। मामा जी! लेकिन क्या कोई ऐसा सूत्र नहीं है जिसका उपयोग करके ऐसी त्रुटियों को हमेशा के लिए रोका जा सकें?'' प्यार से मामा का हाथ थामती हुई मानी बोली।

मामा ने भी प्यार से उसे गले लगा लिया और बोले- ''मानी जी! महत्वपूर्ण कार्य के अवसर पर हमें अपनी 'फुल बॉडी वाले ऑटो मोड' को बंद करके केवल 'ब्रेन मोड' को ही चलाने की आवश्यकता होती है। जब हम मस्तिष्क मोड वाली स्थिति में कोई काम करते हैं तो हमारा ध्यान कभी भी खंडित नहीं होता।''

''समझ गई! समझ गई! आप यह कहना चाहते हैं कि काम के समय काम, खेल के समय खेल और पढ़ाई के समय हमें केवल पढ़ाई में ही ध्यान देना चाहिए।'' मानी बोली और फिर मामा की प्लेट के साथ नाना जी की खाली कटोरी लेकर खुशी से हँसती हुई पराँठे और दही-भल्ले लेने रसोई की ओर चल दी।

- मोहाली (पंजाब)

चाचाजी डायटिंग पर

चित्रकथाः देवांशु वत्स

आस्था और आधुनिकता विरोधी नहीं

बच्चो! चन्द्रयान-३ की महान सफलता ने भारत को विश्व में चन्द्रमा के दक्षिणीध्रुव पर पहुँचने वाला पहला राष्ट्र बना दिया है। आदित्य एल-१ का भी हमने सफल प्रक्षेपण किया ही है। सिद्ध हुआ कि भारत जितना ज्ञानी है उतना ही विज्ञानी भी। इस सर्वोत्तम सफलता के लिए हमारे वैज्ञानिक की अद्‌भुत प्रतिभा, लगन, समर्पण और परिश्रम है लेकिन एक बात जिसकी ओर कम ही लोगों का ध्यान गया होगा वह है उनकी भगवान में आस्था, उनके अन्तरमन तक बसी आस्तिक भारतीयता, संस्कृति में विश्वास।

आपने ध्यान दिया वे इन अभियानों के पहले भगवान वैंकटेश के दर्शन को गए। महिला वैज्ञानिकों की वेशभूषा एवं शृंगार (माँग में सिन्दूर, मस्तक पर टीकी और गले में मंगलसूत्र) तथा पुरुष वैज्ञानिकों में भी कई के मस्तक पर तिलक सिद्ध करते हैं आधुनिक

होने, वैज्ञानिक होने, या प्रखर मेधावी होने का अर्थ परंपरागत संस्कारों को त्यागने से नहीं होता।

हमें अपनी भारतीयता की पहचान छुपाने या मिटाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि स्वाभिमान से अपनाने की प्रेरणा लेना चाहिए क्योंकि जब इतने बड़े-बड़े वैज्ञानिकों से अधिक आधुनिक भला कौन हो सकता है।

राजकीय मछलियाँ | बिहार की राजकीय मछली

मागुर

– डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत और निकट देशों में, मागुर पायी जाती।
कुण्डों, नदियों, तालाबों में, यह आवास बनाती।।
फुट भर लम्बी, शल्कहीन तन,
लम्बी मूछों वाली।
नीचे से हल्की पीली-सी,
ऊपर पीली-काली।।
मछली, अंडे, कीट-पतंगे, जो मिलता सो खाती।
और कभी कूड़ा-कचरा खा, अपनी भूख मिटाती।।
पौधों वाले तल में जाकर,
मादा अंडे देती।
नर के साथ सुरक्षा करती,
बड़े प्यार से सेती।।
गरमी में कुण्डों के नीचे, गड्ढा एक बनाती।
सोती रहती कई माह तक, फिर बाहर आ जाती।।

– भोपाल (म. प्र.)

पाण्डवों का जन्म

– मोहनलाल जोशी

धृतराष्ट्र और पाण्डु भाई–भाई थे। धृतराष्ट्र बड़े थे। परन्तु वे अंधे थे। इसलिये हस्तिनापुर का राजा पाण्डु को बनाया। पाण्डु बड़े भाई का बहुत सम्मान करते थे।

पाण्डु अत्यन्त वीर थे। वे हिंसक पशुओं का शिकार करते थे। वे वन में ही रहने लगे। उनके कुन्ती और माद्री नामक दो पत्नियाँ थी। वे भी वन में रहती थी। पाण्डु को एक ऋषि ने शाप दिया था। उनकी मृत्यु वन में ही हो गई। वन में उनके पाँच पुत्रों का जन्म हुआ था। सबसे बड़े युधिष्ठर थे। वे सभी वन में ही बड़े हुए। बाल अवस्था तक वही रहे। फिर उनको ऋषियों ने राजधानी पहुँचा दिया। उन्होंने धृतराष्ट्र को पाण्डु की मृत्यु के समाचार दिये। युधिष्ठिर को युवराज बना दिया गया। बाल अवस्था में कौरव और पाण्डव मजे से साथ–साथ खेला करते थे।

कौरव और पाण्डवों के खेल

पाण्डु की मृत्यु हो गई थी। हस्तिनापुर का राज धृतराष्ट्र ही संभालते थे। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। सबसे बड़ा पुत्र दुर्योधन था। वह सदा से ही पाण्डवों से शत्रुता रखता था।

एक बार नगर के बाहर खेल का आयोजन हुआ। कौरव और पाण्डव सभी बच्चे वहाँ पहुँच गये। युधिष्ठिर का छोटा भाई भीमसेन बहुत ताकतवर था। वह भोजन बहुत करता था।

दुर्योधन ने सोचा– भीम किसी तरह मर जाएँ। उसने भीम को बहुत सारी खीर खिलायी। खीर में विष मिलाया था खीर खाकर भीम मूर्छित हो गया। दुर्योधन के मित्रों ने उसे रस्सों से बाँध दिया। फिर गंगा नदी में डाल दिया।

सभी राजकुमार नगर लौट आये। दुर्योधन ने कहा– ''हमने सोचा भीम राजमहल आ गया होगा। माता कुंती भीम की चिंता करने लगी। सभी भीम को खोजने में लगे।

भीम का नागलोक गमन

दुर्योधन ने भीम को गंगानदी में डाल दिया। भीम पानी के रास्ते से नागलोक पहुँच गया। नागलोक के राजा ने भीम को पहचान लिया। उसने कहा– भीम अपना दोहिता है। यह यहाँ कैसे आया ? इसकी सेवा करो। इसको कोई कष्ट न होने पावे।

भीम की मूर्छा समाप्त हो गई थी। वह कुछ समय नागलोक में रहा। फिर नागराज ने उसे दिव्य कुण्डों का रस दिया। नागराज ने कहा– ''तुम जितना रस पी सकते हो, पी लो। तुम्हारे शरीर में दस हजार हाथियों का बल आ जायेगा।'' भीम ने आठ कुण्डों का रस पीया। फिर नाग भीमसेन को गंगा के किनारे छोड़ गये। भीम वहाँ से राजमहल आ गया। माता कुन्ती से मिला। कुन्ती की चिन्ता दूर हो गई। भीम और बलशाली हो गया।

– बाड़मेर (राजस्थान)

खोया घोड़ा!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

सूरज से मित्रता

– गिरीश पंकज

चंदा से सूरज की मित्रता हो गई। है न अजीब बात! लेकिन यह सच है। वैसे यह चंदा आकाश का नहीं, धरती का है। प्यारा बच्चा। कक्षा छः में पढ़ने वाला। उसका नाम है चंद्रप्रकाश। प्यार से लोग उसे चंदू कहते हैं। माँ उसे मेरा प्यारा चंदा कहकर बुलाती है।

तो... इस चंदा की मित्रता सूरज से हो गई। वही सूरज, जो रोज सुबह हम सब को जगाता है। लाल-लाल चमकदार सूरज। जिसे उगता हुआ देख लो तो आँखें धन्य हो जाएँ। उस सूरज से चंदू की मित्रता की कहानी मजेदार है। और यह मित्रता एकदम नई-नई है।

पहले तो अपने चंदू भैया सुबह आराम से उठा करते थे। आठ बजे विद्यालय की बस आती थी और चंदू लाख जगाने के बावजूद उठता ही न था। बस आती, हॉर्न बजाती और कुछ देर प्रतीक्षा करके चलो चली जाती थी। जब पिता की थप्पड़ खाते, तब चंदू भैया उठ कर तैयार होते, फिर पिता जी स्कूटर पर बैठा कर उनको विद्यालय तक छोड़ने जाते। अक्सर ऐसा ही होता।

माता-पिता दोनों चंदू की इस आदत से परेशान रहते। चंदू की आदत भी तो खराब हो गई थी। रात को ग्यारह-बारह बजे तक वह अपनी माँ के मोबाइल में विडियो गेम खेलता। जब डाँट पड़ती तो बड़ी मुश्किल से सोने जाता।

बिस्तर पर जाते ही नींद तो आती नहीं। सोते-सोते आधे घंटे और हो जाते। देर से सोते तो देर से उठना होता। बच्चों को कम-से-कम आठ-नौ घंटे की नींद लेनी चाहिए।

चंदू के कुछ दोस्त उसे अधिकांश चिढ़ाते, ''तेरा नाम चन्द्रप्रकाश नहीं, लेटप्रकाश होना चाहिए था। तू ही इकलौता लड़का है, जो विद्यालय देर से आता हैं। प्रार्थना समाप्त होने के बाद।''

चंदू सबकी बात सुनता और हँस पड़ता। लेकिन मन-ही-मन सोचता, मुझे भी अब जल्दी उठना चाहिए। मगर उठे कैसे। उसे तो देर तक जागने की आदत पड़ गई थी।

लेकिन एक दिन चंदू ने ठान लिया कि अब तो वह भोजन करके रात नौ बजे ही सो जाएगा ताकि सुबह छः बजे तक नींद खुल जाए। और एक दिन उसने ऐसा ही किया। भोजन करने के बाद प्रतिदिन की तरह उसने पहले माँ का मोबाइल देखा। मोबाइल कहीं दिखाई नहीं दिया। माँ ने छिपा दिया था।

चंदू समझ गया कि माँ ने मोबाइल में वीडियो गेम खेलने की उसकी आदत छुड़ाने के लिए ही ऐसा

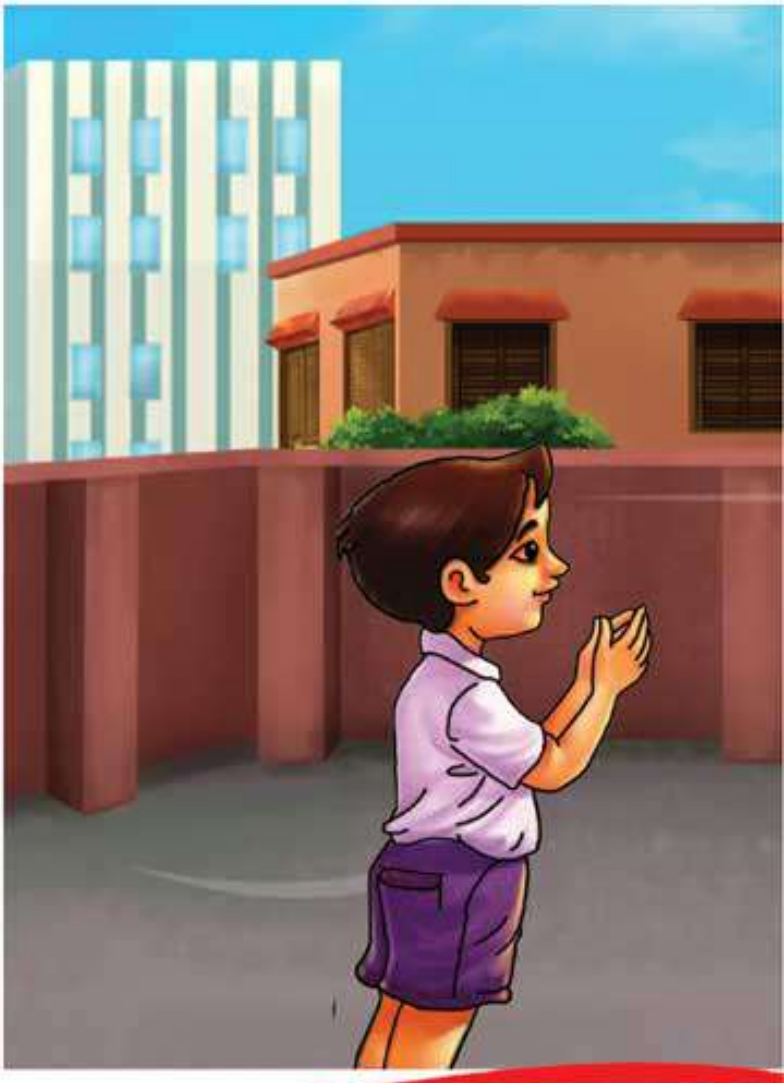

किया है। चंदू मुस्कुराया और सीधे सोने से चला गया। माँ चंदू की हरकत देखकर धीरे-धीरे मुस्कुरा रही थीं। जब चंदू सोने चला गया तो वह बड़ी खुश हुई कि उनका बेटा अब सुधर रहा है।

कुछ देर बाद चंदू गहरी नींद में सो गया। सोने के बाद उसने एक विचित्र सपना देखा कि वह घर की छत पर टहल रहा है, और दूर आकाश में लालिमा छाई हुई है।

सूरज का बड़ा-सा लाल गोला धीरे-धीरे उसकी ओर चला आ रहा है। कुछ देर बाद गोला एकदम पास आ गया और चंदू के सामने एक सुंदर चेहरे वाला आदमी बन कर खड़ा हो गया। चंदू घबरा गया। उसने पहली बार इतना सुंदर आदमी देखा। जैसे देवताओं के चेहरे होते हैं।

चंदू ने पूछा- ''आ.... आप कौन?''

उस व्यक्ति ने कहा- ''मैं सूरज हूँ। वही सूरज, जो रोज सुबह दुनिया को जगाने का काम करता है।''

चंदू ने कहा- ''लेकिन आप तो आदमी हैं?''

सूरज ने हँसते हुए कहा- ''मैं कभी-कभी मानव वेश भी रख सकता हूँ। मैं सूर्यदेव हूँ न। तुमने सुना होगा, देवता किसी भी रूप में सामने आ सकते हैं।'' चंदू ने सूरज देव को प्रणाम करते हुए कहा- ''लेकिन आप मेरे पास क्यों आए हैं?''

सूरज देव ने मुस्कुराते हुए कहा- ''मैं तुमसे मित्रता करने आया हूँ। तुम अच्छे बच्चे हो। सुबह जल्दी उठ जाते हो। सुबह जल्दी उठने वाला हर बच्चा मेरा मित्र है।''

चंदू ने कहा- ''लेकिन मैं तो आज ही उठा हूँ, पहली बार। किन्तु सच कहूँ, तो मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब तक मैं आराम से उठता था। माता-पिता की डाँट खाया करता था। लेकिन अब लगता है, प्रतिदिन सुबह जल्दी उठना चाहिए।

आज जब मैंने लाल-लाल सूरज का गोला देखा, तो मुझे बड़ी खुशी हुई। इसे ही अरुणोदय कहते हैं न! मैं सुना करता था कि सुबह का सूरज देखो, विशेषकर लाल सूरज, तो आँखों को भी अच्छा लगता है। आज मुझे सचमुच बहुत अच्छा लगा। अब मैं प्रतिदिन सुबह जल्दी उठा करूँगा, और सूरज भैया, आपको प्रणाम किया करूँगा।''

चंदू की बात सुनकर सूरज देव ने कहा- ''अब तुम मेरे पक्के मित्र हो गए हो। तो वादा करो कि रोज सुबह जल्दी उठ जाओगे और छत पर आकर सूर्य नमस्कार किया करोगे। यदि तुमने ऐसा किया तो देख लेना, तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा। तुम और सुंदर नजर आने लगोगे। तुम्हारी आँखों की दृष्टि भी अच्छी बनी रहेगी।''

सूरज की बात सुनकर चंदू बहुत खुश हुआ और बोला- ''अब से मैं बिल्कुल ऐसा ही करूँगा। वादा रहा।'' चंदू की बात सुनकर सूरज देव प्रसन्न हुए

और अचानक गायब हो गए। चंदू चकित हो गया। चारों ओर घूम-घूम कर देखता रहा। सूरज देव कहीं नजर नहीं आए। फिर उसने आकाश की ओर देखा, तो वहाँ लाल-लाल सूरज चमक रहा था। धीरे-धीरे वह पीला होकर तेज प्रकाश फेंकने लगा।

चंदू बहुत प्रसन्न हुआ और तभी उसकी नींद खुल गई। ओह!! तो यह सपना था। मैं सपना देख रहा था और सपने में सूरज देवता से बातचीत कर रहा था। यह सोचकर चंदू मुस्कुरा उठा और दौड़कर अपनी छत पर जा खड़ा हुआ। तब उसने देखा, दूर आकाश में लाल-लाल सूरज चमक रहा है।

चंदू ने सूरज को प्रणाम किया और बोला- ''सूरज मेरे मित्र! अब मैं प्रतिदिन रात को जल्दी सोया करूँगा ताकि सुबह जल्दी उठ सकूँ। फिर तुमसे मिलने आया करूँगा। अब तुम मेरे मित्र हो न।''

चंदू को सुबह जल्दी उठा देखकर माँ बड़ी प्रसन्न हुई। उसने चंदू को गले से लगा लिया और बोली- ''अब तो तू बिल्कुल सुधर गया है। हमारा राजा बेटा बन गया है। एकदम प्यारा चंदा।''

चंदू ने कहा- ''हाँ माँ! तेरे चंदा ने अब सूरज से मित्रता जो कर ली है।'' फिर चंदू ने माँ को सपने की बात बताई, तो माँ ने प्रसन्न होकर कहा, ''शाबाश! तेरे एक सुंदर सपने ने तुझे तो बिल्कुल ही बदल दिया। बेटा, जिस बच्चे ने भी सूरज से मित्रता की, वह जीवन में सफल हुआ। सुबह उठो। व्यायाम करो। योग करो तो चुस्ती-फुर्ती बनी रहती है। बुद्धि तेज होती है। तू स्वयं अनुभव करेगा।''

''हाँ, माँ! मुझे भी यही लगता है। मैंने पढ़ा भी है 'जल्दी सोए जल्दी जागे, स्वस्थ रहे रोग सब भागे'।'' इतना बोलकर चंदू विद्यालय जाने की तैयारी करने लगा। आज पहली बार ऐसा हुआ कि चंदू विद्यालय की बस आने के पहले ही घर के बाहर खड़ा हुआ था।

– रायपुर (छत्तीसगढ़)

मनोरंजक पहेलियाँ

– विजयकांत मिश्रा

(१)
बीसों का सिर काट लिया,
न तो मारा, ना ही, खून किया।

(२)
चार कान सिर एक है, एक पैर की नार,
छोटी सी तामस भरी, सब बताओ करके विचार।

(३)
लाठी सा पेड़, तलवार सा पत्ता,
काँख में बच्चा, और ऊपर छत्ता।

(४)
छोटे से रामदास,
कपड़े पहने सौ पचास।

(५)
एक सींग की गाय,
जितना खिलाओ, उतना खाय।

(६)
एक आँख उसमें भी जाला
दिन में बँद, रात में उजियाला।

(७)
एक कहानी मैं कहूँ,
सुन ले मेरे पूत।
बिना पँखों वह उड़ गया,
बाँध गले में वो सूत।

– गुरूग्राम (हरियाणा)

उत्तर :- (१) नाखून (२) लौंग (३) मक्के का पौधा (४) भुट्टा (५) दीपक की बत्ती (६) चाँद (७) पतंग।

योगी आदित्यनाथ जी ने किया बाल अहिल्या अंक लोकार्पित

इन्दौर। १३ सितम्बर २०२३। लोकमाता देवी अहिल्याबाई होळकर की २२८वीं पुण्यतिथि पर श्री अहिल्योत्सव समिति इन्दौर द्वारा आयोजित भव्य समारोह में पधारे उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी ने स्थानीय रवीन्द्र नाट्यगृह में 'देवपुत्र' के **'बाल अहिल्या अंक'** का लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व लोकसभा अध्यक्ष पद्मश्री श्रीमती सुमित्रा महाजन ने की।

'देवपुत्र' के इस विशेषांक का लोकार्पण प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, सरस्वती बाल कल्याण न्यास के अध्यक्ष डॉ. कमल किशोर चितलांग्या एवं प्रबंध न्यासी सीए राकेश भावसार ने करवाया।

इस अवसर पर म. प्र. शासन के यशस्वी मंत्रीगण सुश्री उषा ठाकुर, श्री तुलसीराम सिलावट, सांसद श्री शंकर लालवानी, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, श्री अहिल्योत्सव समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक डागा सहित अनेक गणमान्य नागरिक मंचस्थ थे।

बहेलिया

– दामिनी सिंह ठाकुर

आसमान में उड़ती हुई चिड़ियों का कलरव किसे नहीं भाता ? कितना मनोहारी होता है यह दृश्य! खुले गगन में उड़ते मानो सारी दुनियाँ इनकी है। कभी हवाओं के साथ गोते लगाते, कभी सिंचाई वाले खेत की मेढ़ पे बैठ पानी के साथ अठखेलियाँ करते, कुछ इसी तरह के प्राकृतिक दृश्य देख बहुत प्रसन्न थे बच्चे। पहली बार अपने दादा–दादी के घर जो आए थे। वे बहुत कम समय में इस वातावरण में घुल मिल गए थे।

सुबह–सुबह अमराई में खेलना, गाय के बछड़ों के साथ मस्ती दादा–दादी के साथ गाँव घूमना और उनसे कहानियाँ सुनना उनकी दिनचर्या हो गई थी। एक रोज बच्चों की मस्ती से परेशान होकर माँ ने बहुत डाँट लगायी। जिससे बच्चे रूठ कर अमराई में जाकर गुमसुम से बैठ गए। मन में माँ के लिए गुस्सा था। माँ को तो हमेशा केवल डाँटना ही आता है।

इन विचारों में बैठे–बैठे बच्चे कब अमराई में ही सो गए कुछ पता ही नहीं चला। तभी वहाँ एक व्यक्ति आया, बच्चों को यूँ अकेला देख उन्हें बहलाने, फुसलाने का लालच मन में लिये वह उपाय सोचने लगा, और होंठों पर कुटिल मुस्कान लिए उन्हें बहलाने लगे। बच्चे जो माँ की डाँट से दुखी थे, उन्हें इस समय यह व्यक्ति बहुत अच्छा लग रहा था और माँ बहुत बुरी। दूर खड़े दादा जी ये सब कुछ देख रहे थे। बच्चों को बड़े प्यार से समझाकर घर लेकर आए, साथ में खाना खाया और बच्चों को लेकर सोने चले गए। बच्चों ने कहानी सुनने की जिद की तब दादा जी ने उन्हें कहानी सुनानी शुरू की।

सुनो बच्चो! हमारी अमराई में एक आम का पेड़ था। पेड़ पर एक घोंसला था जिसमें एक चिड़िया अपने बच्चों के साथ रहती थी, चिड़िया अपने बच्चों को बहुत प्यार करती थी। एक दिन किसी बात पर चिड़िया ने बच्चों को डाँट दिया, उस दिन बच्चे नाराज होकर दूसरे पेड़ पर चले गए, वहाँ एक बहेलिया घूम रहा था। उसने चिड़िया के बच्चों को देखकर बहुत खुश हुआ कि आज तो शिकार मिल गया। बहेलिए ने पहले तो बच्चों को दाना खाने को दिया, खूब लाड़–दुलार किया। चिड़िया के बच्चों को लगा बहेलिया कितना अच्छा है हमें कितना प्यार करता है, माँ तो हमेशा डाँटती रहती है।

बहेलिया बच्चों को अपने साथ ले गया बच्चे भी खुशी–खुशी उसके साथ चल दिए कि अब तो माँ की डाँट नहीं खानी पड़ेगी। कुछ दिन तो बच्चे बड़े खुश थे पर धीरे–धीरे बहेलिये ने उन पर ध्यान देना बंद कर दिया।

उन्हें खाना भी नहीं देता था, उन्हें डराता रहता

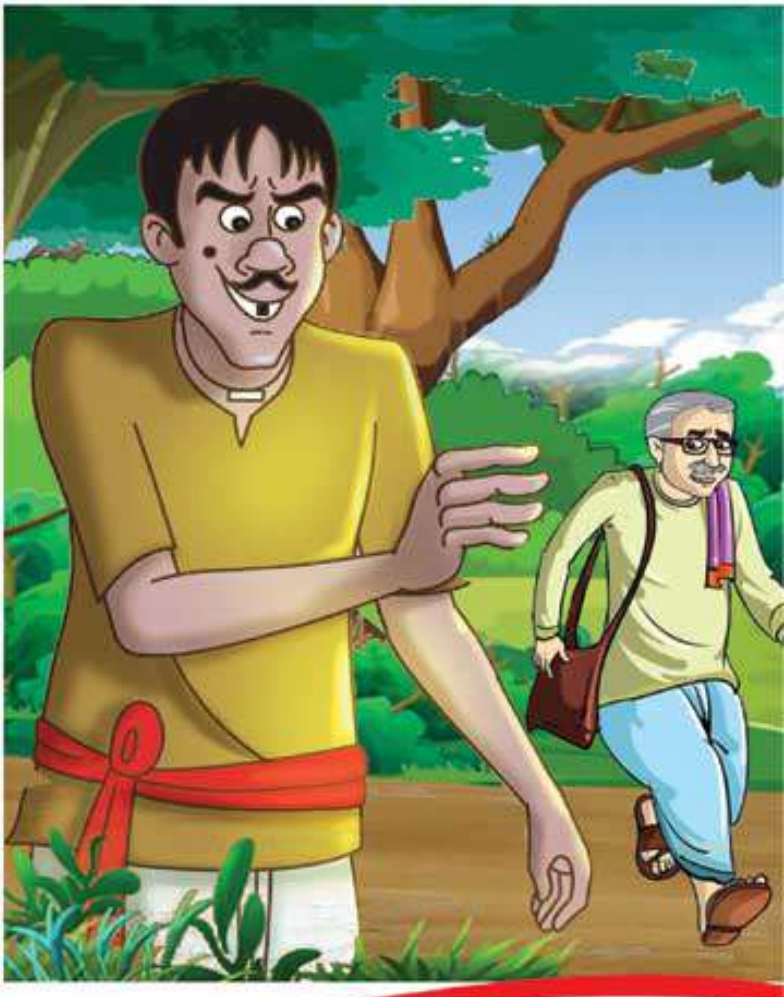

था। अब बच्चों को अपनी माँ की याद आने लगी। माँ डाँटती अवश्य थी पर यदि हम खाना न खाये तो वह स्वयं भी भूखी रहती थी। सुबह हमें डाँटती तो शाम को हमसे ही क्षमा माँग लेती। ये सोचकर बच्चों ने वहाँ से भाग जाने की सोची सुबह उड़ जाने की योजना बनाकर बच्चे सो गए।

बहेलिये को ये बात अच्छी नहीं लगी क्योंकि वो उन्हें बाजार में बेचना चाहता था। अपना नुकसान होता देखकर बहेलिए ने बड़ी निर्दयता से उनके पंख नोच डाले। बच्चे रोते बिलखते रहे, पर बहेलिए को बिलकुल दया नहीं आयी, जब तक उनके नए पंख आए, वे उड़ना भूल चुके थे। उधर उनकी माँ भी उनकी याद में अपने प्राण त्याग चुकी थी।

दादा जी की कहानी सुन बच्चों की आँखें नम ही चुकी थी उन्हें बात समझ में आ गयी थी। वो अचानक उठे और अपनी माँ से लिपट कर खूब रोए और क्षमा भी माँगी। फिर दादा जी ने समझाया कि माता-पिता हमेशा अपने बच्चों को उनकी भलाई के लिए डाँटते हैं उन्हें सँवारने के लिए कभी-कभी कठोर हो जाते हैं पर इसका मतलब ये नहीं कि वो आपसे प्यार नहीं करते। बच्चों की इसी नासमझी की वजह से बाहर बहेलिया उन्हें बहला लेता है। हमेशा सावधान रहना चाहिए बाहर कोई भी आपसे ऐसी बात करें तो तुरंत घर पर अपने माता-पिता को बताना चाहिए। बाहर केवल बहेलिया है उन पर कभी भरोसा मत करो। घर परिवार जैसा सच्चा प्यार बाहर कोई नहीं दे सकता। बाहर केवल बहेलिया है, कहकर बच्चे जोर से हँसने लगे, सबने उन्हें गले लगा लिया।

– इन्दौर (म. प्र.)

बताओ तो जानें

– चाँद मोहम्मद घोसी

चिड़िया रानी की असली परछाई कौन सी है? बताओ तो हम भी जानें।

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

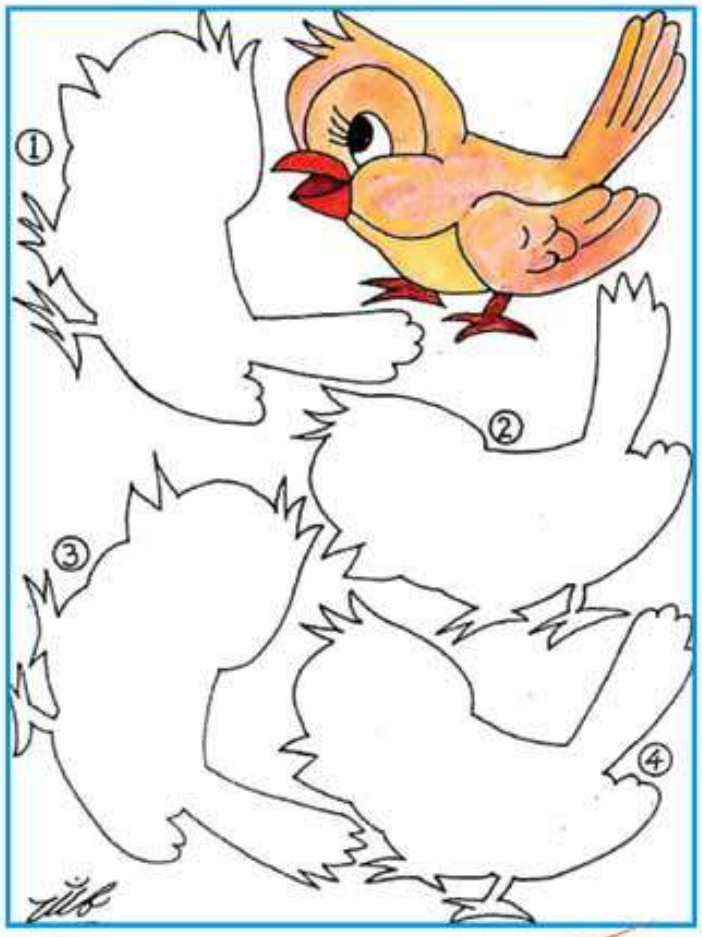

दुष्ट कौन?

चित्रकथा-

अरेरे प्यारेलाल जी अपने बेटे को पीट क्यों रहे हैं?
अरे महेश जी.. क्या करूं मुसीबत है..
मुझे दो महीने के लिए बाहर जाना पड़ रहा है...
...और पीछे से यह दुष्ट जो शैतानियां करेगा उसके लिए इसकी पिटाई तो होनी ही चाहिए ना..

पुस्तक परिचय

सात बाल कहानियाँ

मूल्य १००/-

प्रकाशन- आकांक्षा प्रकाशन, एफ-१५ ए विजय चौक ब्लॉक, विकास मार्ग, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-११००९२

डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल बाल जगत में बहुत रुचि से पढ़े जाने वाले साहित्यकार है। आपकी इस पुस्तक में सात शिक्षाप्रद रोचक बाल कहानियाँ प्रस्तुत हैं।

फुर्र फुर्र

मूल्य ३००/-

प्रकाशक-अभिराम प्रकाशन, ६४५ ए/५७७ जानकी विहार कॉलोनी, जानकीपुरम्, लखनऊ-२२६०२१ (उ. प्र.)

श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' की लेखनी बच्चों के लिए निरंतर कुछ अच्छा लिखती रहती है। इस पुस्तक में आपकी भेंट है शिशुओं के २८ प्यारे-प्यारे गीत सम्पूर्ण बहुरंगी आकर्षक चित्रांकन के साथ।

किटकिट गिलहरी ने पहना चश्मा

मूल्य ६०/-

प्रकाशक-अद्विक पब्लिकेशन, ४१, हसनपुर आई.पी. एक्सटेंशन, परपड़ गंज दिल्ली-११००९२

डॉ. शील कौशिक वर्तमान युग की जानी मानी बाल साहित्य शिल्पी हैं। नए विषय, तर्कयुक्त बातें, अभिनव संकल्पना और मनोरम शैली आपकी इन बाल कहानियों को जीवंत बना रही है।

अनदेखे रंग

मूल्य १००/-

प्रकाशक-बोधि प्रकाशन, सी-४०, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, एक्स. नाला रोड २२ गोदाम, जयपुर-३०२००६ (राज.)

पद्मा चौगांवकर दशकों से आप बच्चों के लिए नए-नए विषय चुनकर रोचक रचनाएँ करने के लिए लब्ध प्रतिष्ठ लेखिका है। इस पुस्तक में आपने एकदम अनूठे विषयों पर उत्कृष्ट बाल कहानियाँ प्रस्तुत की है।

है अपना घर राजमहल

मूल्य ६०/-

प्रकाशन-श्वेतवर्णा प्रकाशन, २३२, बी आय, लोकनायक पुरम् नई दिल्ली-११००४१

श्री नंदीलाल जी ने इस पुस्तक में आपके बाल मनोविज्ञान की गहरी परख प्रकट करते हुए संस्कार, नैतिकता व देशप्रेम पर २२ गीत प्रस्तुत किए हैं।

इस तरह बनाओ

छिपकली

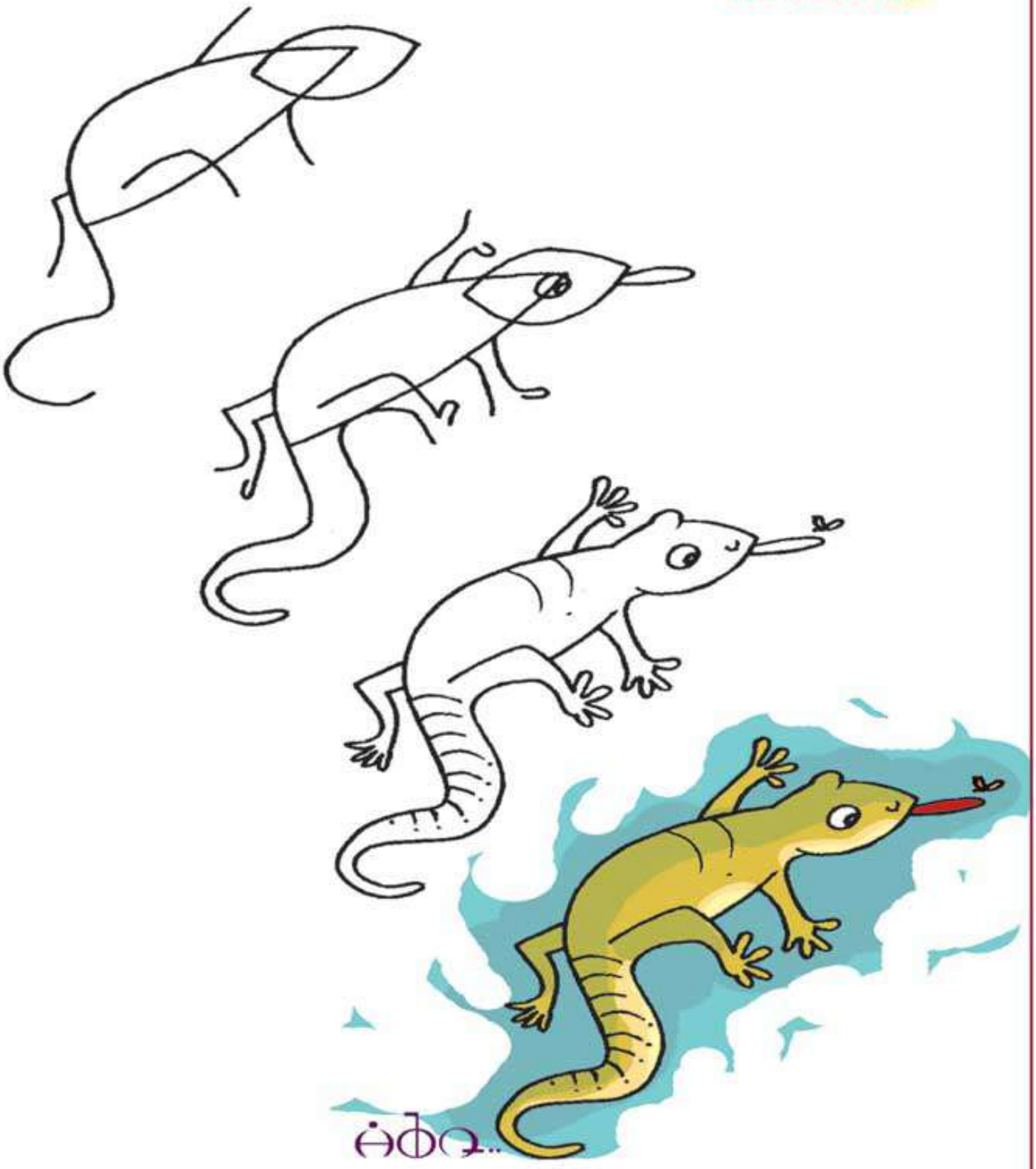

जीत सत्य की होती

– श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

विजय पर्व आ गया दशहरा,
हमको याद दिलाता।
जो अनीति अन्याय मार्ग पर,
चलता, मारा जाता।

था बहुत बल पौरुषशाली,
ज्ञानवान था शासक।
वेद वेत्ता, नीति निपुण अति,
योद्धा, कुशल प्रशासक।

देव दनुज मानव सबको ही,
जीत लिया था उसने।
कुचल पराजित किया उसी क्षण,
शीश उठाया जिसने।

दशों दिशाओं में उसका ही,
बजता था बस डंका।
यश वैभव की गाथा गाती,
थी सोने की लंका।

मद में चूर हुआ था रावण,
क्रूर विकट अभिमानी।
उसने नीति धर्म की बातें,
नहीं किसी की मानी।

इसीलिए महा पराक्रम शाली,
रावण हारा।
अवध नाथ श्री रामचंद्र ने,
था उसको संहारा।

पर्व विजय दशमी का हमको,
सबक यही सिखलाता।
सत्य विजय की होती, असत्य,
हार हमेशा पाता।

असत्, अहं, अन्याय मार्ग को,
जो भी है अपनाता।
हो कितना भी वैभवशाली,
मिट्टी में मिल जाता।

नीति युक्त सन्मार्ग हमेशा,
प्रभु जी हम अपनाएँ।
अहँकार, मद, मोह भूल कर,
मेरे पास न आएँ।

– लहार, भिण्ड (म. प्र.)

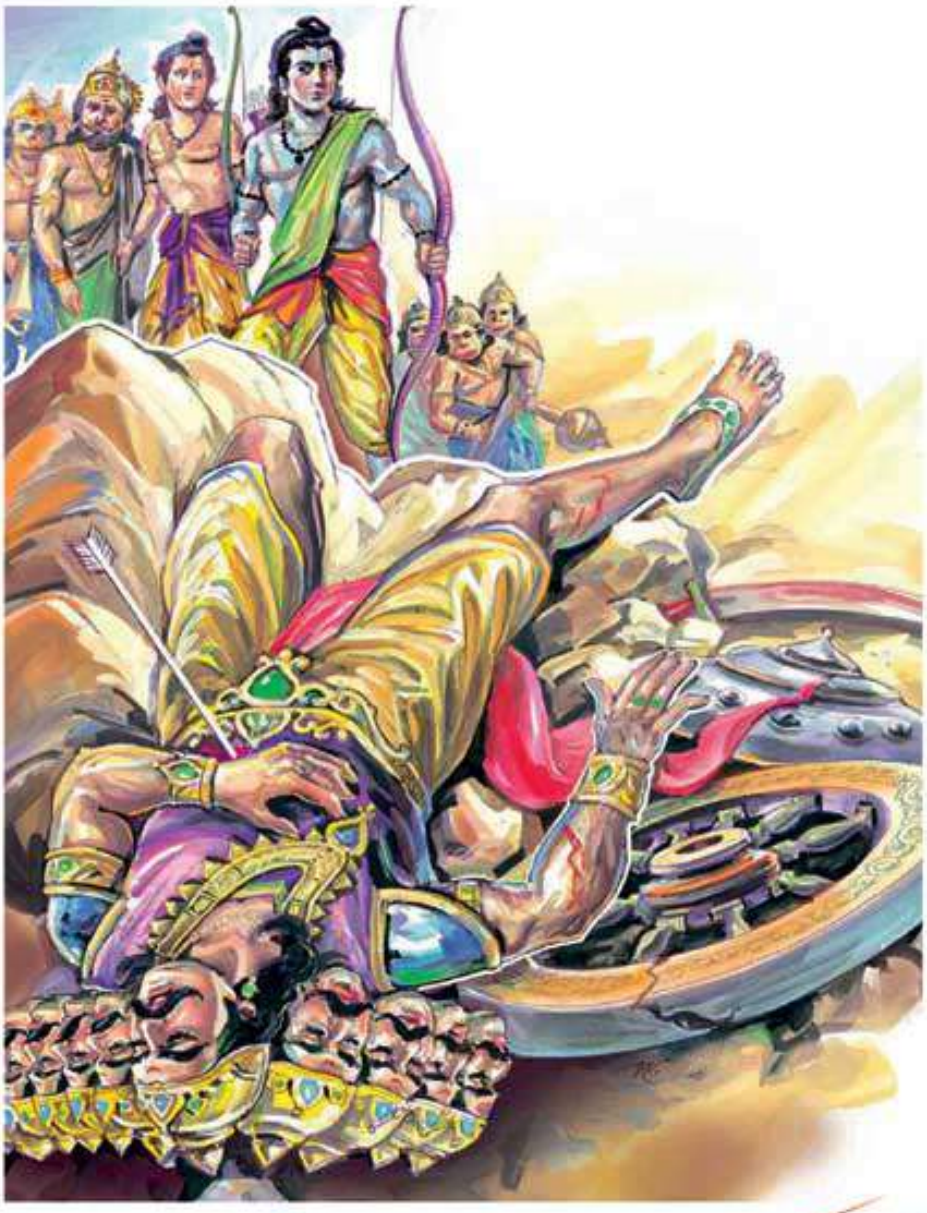

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

सामान्य नियम:-

* एक प्रतियोगिता/पुरस्कार के लिए एक ही प्रविष्टि भेजें।

* प्रविष्टि के ऊपर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम एवं अंत में अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाईल नं. एवं रचना का स्वरचित होने का प्रमाण-पत्र अवश्य दीजिए।

* रचनाएँ हिन्दी में हों। हस्तलिखित रचनाएँ डाक से ही 'देवपुत्र' ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म.प्र.) पर भेजें। टाईप की हुई रचनाएँ इस मेल editordevputra@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। हस्तलिखित रचना का फोटो खींचकर मेल न करें।

* प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०२४ है।

* निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

* सभी रचनाओं का प्रकाशन अधिकार 'देवपुत्र' का होगा।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२३

यह प्रतियोगिता **'देवपुत्र'** के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की स्मृति में आयोजित है। प्रतियोगिता केवल बच्चों के लिए है। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी स्वयं की बनाई बाल कहानी भेज सकते हैं।

पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	११००/-	१०००/-	५००/-५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित इस वर्ष यह पुरस्कार जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल उपन्यास की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कृत कृति को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी। प्रविष्टि हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित यह पुरस्कार इस वर्ष **'छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन प्रसंग पर आधारित एकांकी'** के लिए निश्चित किया है। पुरस्कार होंगे-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	१२००/-	१०००/-	५००/-५००/-

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा उनके पूज्य माता-पिता की स्मृति में स्थापित 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३' देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित बाल साहित्य की किसी एक श्रेष्ठ कृति पर प्रदान किया जाता है। जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ तक प्रकाशित पुस्तक का चयन कर निर्णायक द्वारा घोषित किया जाएगा।

रवि लायद् का विस्मयकारी भारत

भारत वास्तव में अदभुत देश है। यहां के मन्दिरों में केवल ईश्वर की ही पूजा नहीं होती वरन यहां ऐसे मन्दिर भी मौजूद हैं जिनमें जानवरों तक को श्रृद्धा से पूजा जाता है। कर्नाटक के बेंगलुरु का बैल मन्दिर इसी प्रकार की आस्था का एक ज्वलंत प्रमाण है। इतना ही नहीं चन्नापटना का डॉग टेम्पल और केरल के मन्नारसला का श्री नागराज भी इसी श्रेणी के उदाहरण हैं। राजस्थान के जयपुर का गलताजी भी विशेषतः बन्दर मन्दिर के रूप में ही पूजा जाता है।

हैदराबाद में एक पुरानी बस्ती है 'मगर की बावली' पर इस जगह को अब इस नाम से कोई नहीं जानता। इसकी पहचान अब 'बौनों की गली' के नाम से है क्योंकि यहां रहता है राम राज चौहान का परिवार। यह एक ऐसा परिवार है जो बीती तीन पीढ़ियों से बौनेपन का शिकार है। 21 सदस्यों वाले इस परिवार में 18 बौने हुए जिनमें अब केवल 9 जीवित हैं और सब के सब ही बौने हैं। रामराज इसे अनुवांशिक रोग मानते हैं जो इनके दादा के समय से चला आ रहा है। रामराज को बहुत पीड़ा है कि उनके परिवार को देखकर हँसते तो सब हैं, पर काम कोई नहीं देता।

भारत चीनी के उत्पादन का जनक है। यहां लगभग 2000 साल से यह उदयोग स्थापित है जिससे सम्बंधित गन्ने के रस से गुड़ आदि बनाने के वर्णन तो 6000 वर्ष पूर्व के भी उपलब्ध हैं।

सी.सी.डे. या कैफ़े कॉफी डे देश के युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय है। इसके संस्थापक वी.जी.सिद्धार्थ दवारा अपने ऊपर लदे कर्ज़ से परेशान होकर आत्महत्या कर लेना कंपनी के लिए एक बड़ा झटका था। सिद्धार्थ के जाने के बाद उनकी पत्नी मालविका हेगड़े ने हिम्मत व कुशलता से कम्पनी को कुछ इस तरह सम्भाला कि सन 2019 में जो कर्ज़ 7000 करोड़ का था वह मार्च 2021 तक घटकर कुल 1,779 करोड़ ही रह गया। इस समय सी.सी.डे. भारत के 165 शहरों में 572 कैफ़े संचालित कर रहा है। 36,326 वेंडिंग मशीनों के साथ सी.सी.डे. देश का सबसे बड़ा कॉफी सर्विस ब्रांड है। निश्चित तौर पर मालविका ने उन महिलाओं के लिए एक मिसाल कायम की है जो जीवन में चुनौतियों के आगे घुटने टेक देती हैं।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०९/२०२३ | प्रेषण तिथि ३०/०९/२०२३ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

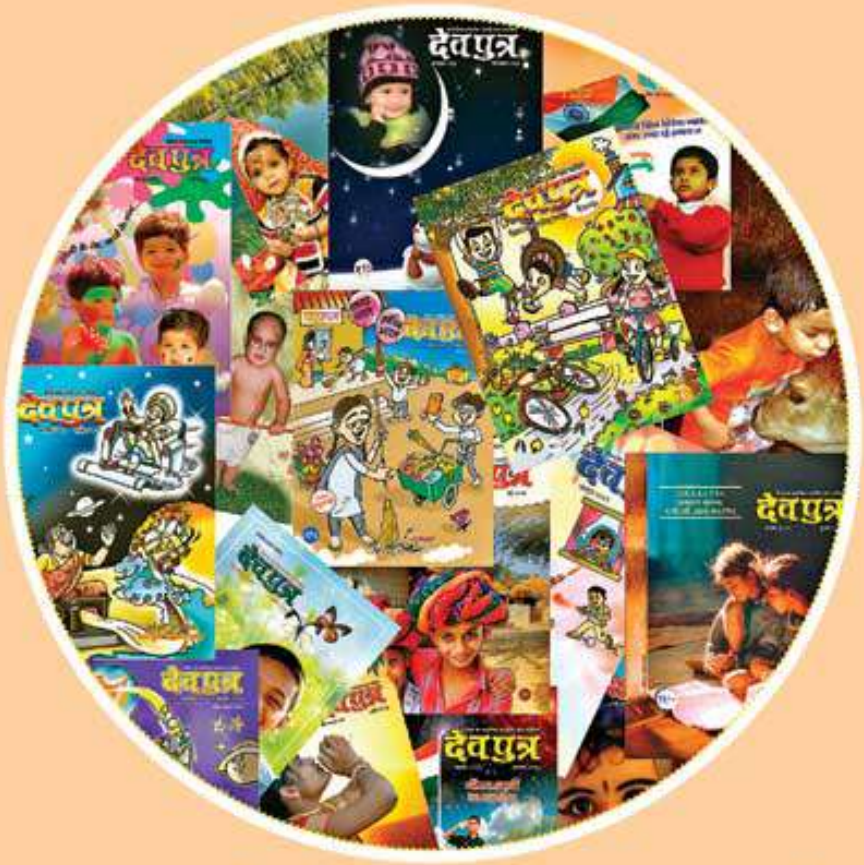

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना